A Daily News Magazine
इंदौर
शनिवार, 03 अगस्त, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 282, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

राहुल गांधी और इक्कीसवीं सदी का चक्रव्यूह

अरुण कुमार त्रिपाठी

आम बजट पर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का भाषण महाभारत के रूपकों और पौराणिक आख्यानों से लदा हुआ था। उम्मीद है कि इस संवाद शैली का संदेश दूर तक जाएगा और देश की आम जनता और बौद्धिक वर्ग को भी समझ में आएगा कि संघ परिवार और कॉरपोरेट घरानों के चक्रव्यूह में किस तरह देश का आमजन फँसा हुआ है। राहुल गांधी ने 18 वीं लोकसभा के पहले सत्र से ही संवाद की जो शैली चलाई है उस पर इस देश का उदारवादी लोकतंत्र समर्थक तबका अगर मोहित है तो वामपंथी और सेक्यूलर लोग खिन्न हैं। उदारवादी और सर्वधर्म समभाव समर्थक वर्ग कह रहा है कि धर्म और पौराणिक आख्यानों के माध्यम से हिंसा और नफरत फैलाने वाले संघ परिवार को इसी भाषा शैली में जवाब दिया जाना चाहिए। तभी वे समझेंगे और तभी जनता उनसे दूर जाएगी।

जबकि वामपंथी और सेक्यूलर तबके का कहना है कि रामायण- महाभारत और दूसरे पौराणिक ग्रंथों के आख्यानों की मदद से इक्कीसवीं सदी का धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी और लोकतांत्रिक विमर्श चलाना संभव नहीं है। उसके लिए दूसरी भाषा गढ़नी होगी। क्योंकि स्वतंत्रता संग्राम में यह विमर्श चलाया गया और उसके दुष्परिणाम सांप्रदायिक विभाजन के रूप में सामने आए। गांधी भी तमाम रूपक अपनी परंपरा से उठाते थे। लेकिन वे भीतर से इतने स्पष्ट और दृढ़ थे कि उनका कोई गलत इस्तेमाल नहीं कर सकता था। गांधी जैसी क्षमता सभी में नहीं होती और इसीलिए डॉ. राम मनोहर लोहिया का धार्मिक प्रतीकों का इस्तेमाल आखिरकार संघ परिवार के ही खाते में चला गया। समाजवादी आंदोलन के आलोचकों का तर्क यही है कि डॉ. राम मनोहर लोहिया ने राम, कृष्ण और शिव जैसे व्याख्यान देकर संघियों की बड़ी मदद की। इसी के चलते सांप्रदायिकता मजबूत हुई। कई लोग तो राममंदिर आंदोलन का दोष डॉ. लोहिया पर यह कहते हुए लगाते हैं कि उन्होंने ही रामायण मेला का विचार प्रस्तुत किया था। इसी प्रेरणा से आडवाणीजी रथ लेकर निकल पड़े। अगर ऐसा था तो फिर क्यों राहुल गांधी, जो कि कांग्रेस की परंपरा के वाहक हैं और जिस परंपरा से आज़ादी के बाद डॉ. लोहिया का टकराव होने लगा था, वे पौराणिक और धार्मिक प्रतीकों के माध्यम से लोकतंत्र और संविधान की रक्षा का आख्यान उसी प्रकार रच रहे हैं जैसा लोहिया ने किया था? वास्तव में आज की सांप्रदायिक समस्या की जड़ में भारत के विभाजन की औपनिवेशिक नीति है। उसी ने रामायण और महाभारत को इतिहास की औपनिवेशिक कसौटी पर कसने का अकादमिक और बौद्धिक माहौल बनाया। उसी के चलते समाज का वह तबक़ा जो आधुनिक ज्ञान का उपासक है, वह अपनी परंपरा से कटता गया। एकांगी ज्ञान ख़तरनाक होता है वह सांप्रदायिकता की ओर ही जाता है। रामकथा के एकदम विपरीत महाभारत ऐसा महाआख्यान है कि उसमें कट्टरता की गुंजाइश बहुत कम है। वह समाज के समूह, व्यक्ति और संस्था सभी को आईना दिखाता है। इसीलिए महाभारत के विद्वान श्रीपाद दामोदर सातवलेकर कहते भी हैं कि महाभारत में इतनी कथाएं हैं और उसके इतने आयाम हैं कि उसका कोई न कोई पक्ष हर युग में प्रासंगिक रहेगा। महाभारत वास्तव में जातीय इतिहास है। महाभारत एक सभ्यतामूलक आख्यान है जिसमें मानव मन की क्षुद्रताएं और श्रेष्ठताएं किसी न किसी रूप में हर पात्र में मौजूद हैं। महाभारत अपने विस्तार और यथार्थपरकता में मानव जीवन के इतना निकट है कि एक तरफ़ वह रामायण की सीमाएं तोड़ता है तो दूसरी ओर उससे पैदा हुई सांप्रदायिकता और कट्टरता का निदान भी करता है। राहुल गांधी अगर महाभारत के माध्यम से अपनी बात कह रहे हैं तो वह भाजपा और संघ परिवार के अयोध्यावाद का सही प्रतिउत्तर है।

भाजपा के अयोध्यावाद ने न सिर्फ अयोध्या बल्कि उसके बहाने पूरे देश को ठगा है। उनके वाणी और कर्म का अंतर इतना ज़्यादा है कि वे कहीं भी राम के त्याग और साहस को छू नहीं पाते। लेकिन वे राम को अस्त्र बनाकर पूरे समाज को अपने घेरे में ले आते हैं। इसी को राहुल गांधी ने चक्रव्यूह या पद्मव्यूह कह कर संघ और कॉरपोरेट के अभेद्य किले को भेदने की कोशिश की है।

पौराणिक प्रतीकों और महाकाव्यात्मक रूपकों का प्रयोग करके राहुल गांधी सॉफ्ट हिंदुत्व चला रहे हैं, यह बात वही लोग कह सकते हैं जो अंग्रेजी इलीट के चश्मे से भारतीय समाज को देखते हैं। भारतीय समाज इन्हीं प्रतीकों और रूपकों में जीता है और अपनी बात रखता है। राहुल गांधी या उनके इंडिया गठबंधन के सामने इक्कीसवीं सदी की बड़ी चुनौती है। जहां पूंजीवाद ने धार्मिक राष्ट्रवाद से सांठगांठ करके देश के सारे संसाधनों पर कब्जा करने की योजना बना रखी है। वास्तविक लोकतंत्र और संविधान का शासन वही कायम कर सकता है जो पूंजी और राज्य को जनता की चाकरी में लगा सके। राहुल गांधी के पास लेकिन वे सीख रहे हैं और उनकी सीखने की यह कोशिश एक बड़े उद्देश्य के लिए है। यही कारण है कि उनका इस व्यवस्था को बेनकाब करने का प्रयास व्यर्थ नहीं गया। इसीलिए जब उन्होंने चक्रव्यूह के केंद्र में खड़े छह महारथियों का ज़िक्र किया तो सत्तापक्ष तिलमिला गया और उन पर संसदीय नियमों के उल्लंघन का आरोप लगाने लगा।

लेकिन राहुल गांधी जाति जनगणना के जिस अस्त्र से संघ परिवार के चक्रव्यूह या पद्मव्यूह को भेदने की बात कर रहे हैं उसके लिए उन्हें तमाम मिथकों और प्रतीकों की नई व्याख्या अपनानी होगी। राहुल गांधी को यह ध्यान रखना होगा कि पूंजीवादी असमानता और जातिगत असमानता के साथ सांप्रदायिकता से लोहा लेने का उनका और इंडिया का संकल्प कहीं प्रतीकों और रूपकों के आवरण में उलझ कर न रह जाए। उनकी कांग्रेस पार्टी ने भी उदारीकरण के बहाने और चुनाव जीतने की लालच में इस देश के लोकतंत्र को कम क्षति नहीं पहुंचाई है। राजनीतिक पतन के उसी कीचड़ में संघ परिवार का कमल खिला है। यही पद्मव्यूह है जिसे राहुल ने चक्रव्यूह बताया है। जब शिवभक्त कांवड़ियों का सहारा लेकर सांप्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति चल रही हो तो शिव जी की बारात के माध्यम से समाजवादी परिवर्तन का स्वप्न देखना एक बड़ी बात है। देखना है ये रूपक जमीनी आंदोलनों को कितनी शक्ति देते हैं और संसद को जनता के हित में फ़ैसला लेने के लिए कितना मजबूर करते हैं?

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

5 सदस्यता योजनाओं में से चुनिए

गोदी मीडिया और विशाल कारपोरेट मीडिया के मुक़ाबले स्वतंत्र पत्रकारिता का साथ दीजिए और उसकी ताक़त बनिए। 'सत्य हिन्दी' की सदस्यता योजना में आपका आर्थिक योगदान ऐसे नाज़ुक समय में स्वतंत्र पत्रकारिता को बहुत मज़बूती देगा। याद रखिए, लोकतंत्र तभी बचेगा, जब सच बचेगा।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

कुदरत का 'कहर' तबाह हो रहे शहर के शहर

हिमाचल-उत्तराखंड से लेकर वायनाड तक, चारों ओर तबाही का मंजर

लोगों का घर बहा, परिवार बिछड़ा और कई अपनों की भी हो गई मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। हिमाचल-उत्तराखंड से लेकर केरल के वायनाड में भी कुदरत ने कहर बरपाया है। इस प्राकृतिक आपदा में न जाने कितनी जिंदगी खत्म हो गई तो कई लोग जिंदगी जीने के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। हालांकि, इन सभी जगह आई प्राकृतिक आपदा में केंद्र और राज्य सरकार की तरफ से लगातार राहत-बचाव अभियान चलाया जा रहा है। वायनाड में तो गांव-गांव के पूरी तरह से तबाह हो गए हैं। मंजर ऐसा है कि वहां की तस्वीर देखकर हर किसी की दिल दहल जाए। ऐसा ही भयानक मंजर हिमाचल और उत्तराखंड में भी है। वायनाड में भूस्खलन से प्रभावित चूरलमाला में बचाव कार्य चौथे दिन भी जारी है। केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने कहा कि मरने वालों की संख्या 300 से अधिक हो गई है। भारी बारिश और चुनौतीपूर्ण इलाके के बावजूद 40 बचाव दल तलाशी अभियान चला रहे हैं। यह 40 टीमें भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों के छह क्षेत्रों में तलाशी अभियान चला रही हैं।

हिमाचल में 5 जगह बादल फटे, 50 लोग लापता

हिमाचल के कुल्लू मंडी और शिमला में बादल फटने से तबाही का मंजर है। मंडी और कुल्लू की घटना में करीब पांच लोगों की मौत हो गई। वहीं 50 से ज्यादा लोग लापता हुए हैं, जिनकी तलाश की जा रही है। कई घर और स्कूल, अस्पताल भी इस घटना में क्षतिग्रस्त हो गए हैं। कुल्लू जिले में मलाना परियोजना का एक बांध टूट गया है। कुल्लू के डिप्टी कमिश्नर (डीसी) तोरुल एस रवीश ने एक बयान में कहा कि फिलहाल हालात कंट्रोल में हैं और अभियान जारी है।

उत्तराखंड में धंस रहे पहाड़, घर-जानवर सब दबे

उत्तराखंड में पिछले दो दिनों में आफत की बारिश ने पहाड़ी क्षेत्रों में भारी नुकसान किया है। बारिश के कहर ने 14 लोगों की जान ले ली है, कई मवेशी और घर भी भूस्खलन की वजह से दब गए हैं। आपदा हालात का जायजा लेने सीएम धामी ने रुद्रप्रयाग, टिहरी, पौड़ी आदि जिलों का हवाई सर्वेक्षण भी किया और देहरादून में आपदा नियंत्रण कक्ष एस और सभी जिलों के अधिकारियों से ताजा घटनाक्रम की जानकारी भी लगातार ले रहे हैं। पीएमओ भी उत्तराखंड की आपदा पर बराबर नजर रखे हुए हैं और पीएम मोदी ने यहां वायुसेना को मदद के लिए भेजा है, जिसमें चिनूक हेलीकॉप्टर भी शामिल हैं। शासकीय जानकारी के अनुसार, रुद्रप्रयाग में मंदाकिनी नदी के उफान ने पैदल केदारमार्ग को नुकसान पहुंचाया है, जिससे करीब दो हजार तीर्थ यात्री फंस गए, एसडीआरएफ ने वैकल्पिक मार्ग बना कर यात्रियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया है। रामबाड़ा, सोन प्रयाग में भी भारी नुकसान हुआ है।

प्रदेश में भारी बारिश से 9 डैम के गेट खोलने पड़े

दो युवक बहे,150 कांवड़ियों ने पार की उफनती नदी; भोपाल में बड़ा तालाब फुल, भदभदा,कोलार के खुले गेट

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बारिश का दौर जारी है। भोपाल में रातभर से तेज बारिश हो रही है। बड़ा तालाब में पानी फुल हो गया है। इसकी क्षमता 1666.80 फीट है। गुरुवार तक इसमें 1666 फीट पानी था, जो शुक्रवार सुबह पूरा भर गया। कलियासोत के 10 और भदभदा डैम के 5 गेट खोलकर पानी छोड़ा जा रहा है।

प्रदेश में लगातार बारिश होने से शुक्रवार को 9 डैम के गेट खोल दिए गए हैं। भोपाल में कोलार डैम के 4, कलियासोत के 13, भदभदा के 5, नर्मदापुरम में तवा डैम के 9, अशोकनगर में राजघाट के 8, जबलपुर में बरगी के 7, रायसेन के बारना डैम के 6, विदिशा में हलाली डैम के 2 और छिंदवाड़ा में माचागोरा डैम के 4 गेट खोल दिए गए हैं।

4 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों में चार जिलों रायसेन, विदिशा, नर्मदापुरम और मंदसौर में आकाशीय बिजली गिरने के साथ भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। रायसेन के भीमबेटका और सांची, विदिशा के उदयगिरि में भारी बारिश हो सकती है।

रायसेन में रिछन नदी में दो युवक बहे, एक को बचाया

रायसेन जिले में लगातार बारिश से नदी-नाले उफान पर आ गए। शुक्रवार को रिछन नदी पर बने रपटे पर बाढ़ का पानी आ गया। धनिया खेड़ी निवासी सुनील बैरागी, और चंद्रेश बैरागी रपटा पार रहे थे, तभी पानी का बहाव अधिक होने की वजह से दोनों बह गए। इसमें चंद्रेश को वहां मौजूद लोगों ने बचा लिया। सुनील की तलाश की जा रही हैं।

रीवा-भोपाल के मध्य नई ट्रेन का संचालन विंध्य क्षेत्र के लिए मिली बड़ी सौगात

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हरी झंडी दिखाकर ट्रेन को किया रवाना

भोपाल (नप्र)। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने रीवा-भोपाल के मध्य नवीन ट्रेन संचालन के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि रीवा से भोपाल के बीच यात्रियों की लंबी वेटिंग रहती थी, इस नवीन ट्रेन के संचालन से आमजन को बड़ी राहत मिलेगी। उप-मुख्यमंत्री ने कहा कि विंध्य क्षेत्र के निवासियों के लिए यह एक बड़ी सौग़ात है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव नवीन ट्रेन को शुक्रवार रात्रि भोपाल से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उल्लेखनीय है कि यह नई रेल-सेवा (22145/46) 2 अगस्त से प्रारंभ हो रही है। भोपाल से यह ट्रेन शुक्रवार और रविवार को रात्रि 11 बजे चलेगी और रानी कमलापति, इटारसी, जबलपुर होकर अगले दिन सुबह 9:15 बजे रीवा पहुंचेगी। इसी तरह यह ट्रेन रीवा से शनिवार और सोमवार की रात 10:30 बजे चलेगी तथा सुबह 8:05 बजे भोपाल पहुंचेगी।

सुप्रभात

हैं तेरे पास क्या,
ऐसा जिसे खोने से डरता है
भरी बरसात में क्यों
तर-बतर होने से डरता है
अगर तकलीफ है तो
बांटकर हल्का उसे करले
गजब इन्सान है जो
आजकल रोने से डरता है
भले बंजर जमीनों का
तुझे पट्टा मिला फिर से
बहा अपना पसीना किस
लिए बोने से डरता है
बुरे हो चाहे अच्छे हों,
जिन्हें आना है आएंगे
तू ख्वाबों की वजह से,
खामखां सोने से डरता है
हमारा जिस्म मिट्टी का है,
मिट्टी में ही मिलना है
इसे मत बोझ माना कर,
इसे ढोने से डरता है।

– राकेश अचल

ढुलमुल रवैया छोड़े एनटीए, परीक्षा सिस्टम सुधारने की जरूरत

- **सुप्रीम कोर्ट ने कहा-नीट यूजी 2024 पेपर की शुचिता प्रभावित नहीं हुई थी**
- **शीर्ष अदालत ने केंद्र की कमेटी का किया विस्तार,30 सितंबर तक मांगी रिपोर्ट**

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उसने नीट यूजी 2024 परीक्षा कैंसल नहीं किया क्योंकि परीक्षा की शुचिता प्रभावित नहीं हुई थी। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला जिससे यह पता चले कि सिस्टमेटिक चूक हुई हो लेकिन इस दौरान सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अगुवाई वाली बेंच ने एनटीए को नसीहत दी है कि उसे अपना ढुलमुल रवैया बंद करना चाहिए, क्योंकि इससे स्टूडेंट्स के हित प्रभावित होते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में बनाई गई कमेटी का विस्तार किया और कमेटी से अपनी रिपोर्ट 30 सितंबर तक पेश करने को कहा है। सुप्रीम कोर्ट ने 23 जुलाई को नीट पेपर रद्द करने से इनकार कर दिया था और इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने 2 अगस्त को डिटेल आदेश पारित किया है। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ की

अगुवाई वाली बेंच ने कहा कि एनटीए को ढुलमुल रवैया नहीं रखना चाहिए। कोर्ट ने कहा कि छात्रों का हित इसमें नहीं है। केंद्र ने पूर्व इसरो चीफ के. राधाकृष्णन की अगुवाई में एक कमेटी का गठन किया था। सुप्रीम कोर्ट ने इस कमेटी का दायरा बढ़ा दिया है और कहा है कि चूंकि दायरा अब बढ़ा दिया गया है, ऐसे में कमेटी परीक्षा सिस्टम में सुधार और उसकी कमियों को दूर करने के लिए तमाम उपाय पर अपनी रिपोर्ट 30 सितंबर तक पेश करे। सुप्रीम कोर्ट ने राधाकृष्णन कमेटी से कहा है कि एग्जामिनेशन सिस्टम को मजबूत करने के लिए उन्नत टेक्नोलॉजी अपनाने के लिए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर (एसओपी) तैयार करने पर विचार करना चाहिए। नीट पेपर के दौरान जो दिक्कतें पैदा हुई हैं उसे केंद्र द्वारा दूर करना चाहिए।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5°c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शनिवार,03 अगस्त 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

रिकॉर्ड समय में बना डाला वायनाड में 190 फीट लंबा पुल

2 महिला अफसरों ने किया लीड,लगातार डटे रहे 150 सेना के जवान

वायनाड़ (एजेंसी)। भारतीय सैनिकों ने केरल भूस्खलन से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र को जोड़ने के लिए बेली ब्रिज का निर्माण किया। मेटल से बने इस पुल का निर्माण रेकॉर्ड समय में पूरा किया गया है। कहा जा रहा है कि सेना ने इस पुल को रातभर में बना डाला। भारत के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक केरल राज्य में भारी बारिश के कारण मंगलवार को तड़के वायनाड में भूस्खलन हुआ था। स्थानीय नदी में बढ़ते पानी के कारण बुधवार को एक अस्थायी पुल बह गया। पुल बह जाने के बाद सेना के इंजीनियरों ने निकटतम शहर चूरलमाला से प्रभावित क्षेत्र मुंडक्कई तक भारी उपकरण ले जाने के लिए 190 फुट (58 मीटर) का पुल बनाने के लिए दौड़ लगाई। लगातार तेजी से मेहनत करके रातभर में पुल बना डाला। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि पुल बनाने का काम बुधवार रात 9 बजे शुरू हुआ और गुरुवार शाम 5.30 बजे पूरा हुआ। अन्य बचाव टीमों के समन्वय में सेना की टुकड़ियां अट्टामाला, मुंडक्कई और चूरलमाला में बचाव कार्य कर रही हैं। प्रवक्ता ए. भारत भूषण बाबू ने बताया कि दो महिला अधिकारियों, मेजर सीता शेल्के और मेजर अनीश ने फ्रंट से लीड करके अस्थायी 190 फुट लंबा बेली पुल का निर्माण कराया।

24 टन वजन सह सकता है पुल

यह पुल 24 टन वजनी वाहनों को सहन कर सकता है, जिससे राहत सामग्री और बचाव दल को पहुंचाने में मदद मिलेगी। सेना ने इस पुल को रिकॉर्ड समय में बनाया है, इस पुल के निर्माण से राहत कार्यों को और गति मिलेगी। भारतीय सेना के जवानों ने अपनी बहादुरी और समर्पण का परिचय देते हुए इस पुल का निर्माण पूरा किया है। उनकी इस उपलब्धि की सराहना की जा रही है।

बेंगलुरु से सड़क मार्ग से आए पुर्जे

वायनाड में सेना के सभी बचाव कार्यों के प्रभारी मेजर जनरल वी टी मैथ्यू ने गुरुवार सुबह मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन से मुलाकात की और उन्हें तथा राज्य मंत्रिमंडल को बचाव कार्यों के बारे में जानकारी दी। विजयन ने पुल को इतनी तेजी से पूरा करने के लिए अधिकारी की सराहना की। मैथ्यू ने मीडिया को बताया कि पुल निर्माण के लिए पुर्जे बेंगलुरु से सड़क मार्ग से लाए गए थे और दिन-रात की कड़ी मेहनत के कारण ही यह इतनी जल्दी पूरा हो पाया। सेना बचाव और राहत अभियान के दूसरे चरण में आगे बढ़ रही है। अफसर ने कहा कि पुल की क्षमता 24 टन है। उन्होंने कहा, इस पुल से सभी जरूरी वाहन गुजर सकते हैं। साथ ही, यह तब तक यहां रहेगा जब तक कि स्थायी पुल नहीं बन जाता। मैथ्यू ने कहा कि इस अभियान में 500 से ज्यादा सैन्यकर्मी हिस्सा ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि हाल के दिनों में उन्होंने इस पैमाने की तबाही नहीं देखी है और इसलिए यह चुनौतीपूर्ण भी है।

संक्षिप्त समाचार

जो घर से बाहर नहीं निकले, वह दूसरों को खत्म करेंगे

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में अब या तो देवेंद्र फडणवीस रहेंगे या तो हम रहेंगे। उद्धव ठाकरे के इस बयान पर अभी भी घमासान जारी है। अब फड़णवीस के समर्थन में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे सामने आए हैं। उन्होंने सीधे तौर से उद्धव ठाकरे पर तंज कसा है। सीएम शिंदे ने कहा कि यह अजीब है कि जो लोग कभी अपने घरों से बाहर नहीं निकले, वे अब युद्ध के मैदान में दूसरों को खत्म करने की बात कर रहे हैं। शिंदे ने कहा कि वह फडणवीस के साथ मजबूती से खड़े हैं। बता दें कि महाराष्ट्र की राजनीति में उबाल तब आया, जब पूर्व मंत्री अनिल देशमुख ने दावा किया कि फडणवीस ने उन पर उद्धव ठाकरे और आदित्य ठाकरे को जेल में डालने का दबाव बनाया था। बुधवार को शारदा ऑडटोरियम में उद्धव ठाकरे ने खुले तौर पर डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस को चुनौती दी थी। उन्होंने देवेंद्र फडणवीस पर आदित्य ठाकरे को जेल में डालने के लिए षडयंत्र रचने का आरोप लगाया था। मीटिंग में शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख ने कहा था कि बीजेपी शुरू से ही जोड़तोड़ की राजनीति कर रही है।

चक्रव्यूह वाले भाषण के बाद ईडी रेड की हो रही तैयारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी का दावा है कि उनके खिलाफ ईडी यानी प्रवर्तन निदेशालय रेड की योजना बना रहा है। उनका कहना है कि 'चक्रव्यूह' वाले भाषण के बाद इस ऐक्शन की तैयारी की जा रही है। दरअसल, आम बजट 2024 पर बात करते हुए कांग्रेस सांसद ने कमल के चिह्न का जिक्र किया था और कहा था कि 21वीं सदी में नया चक्रव्यूह बनाया जा रहा है। माइक्रोब्लॉगिंग प्लेटफॉर्म पर राहुल ने लिखा, जाहिर है कि 2 इन 1 को मेरा चक्रव्यूह वाला भाषण पसंद नहीं आया है। ईडी के अंदरूनी सूत्रों ने मुझे बताया है कि एक रेड की योजना बनाई जा रही है। खुली बांहों से स्वागत कर रहा हूं।

यूपी के सपा सांसद बाबू सिंह कुशवाहा की संपत्ति जब्त

जौनपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के जौनपुर से समाजवादी पार्टी सांसद बाबू सिंह कुशवाहा के खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की कार्रवाई हुई है। ईडी ने लखनऊ के कानपुर रोड पर स्थित बाबू सिंह कुशवाहा की करोड़ों की संपत्ति को जब्त कर लिया है। ईडी की टीम बुलडोजर के साथ कानपुर रोड पहुंची है। कानपुर रोड स्थित स्कूटर इंडिया के सामने

जौनपुर के सांसद बाबू सिंह कुशवाहा की करोड़ों रुपये की भूमि को जब्त करने ईडी की टीम पहुंच गई है। निर्माण कार्य तोड़ने के लिए बुलडोजर साथ लेकर पहुंची। जौनपुर से समाजवादी पार्टी सांसद के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग केस दर्ज है। इसी मामले में ईडी की टीम ने शुक्रवार को कार्रवाई की।

चलती बाइक पर युवक को लगी गोली, थाने का घेराव

जबलपुर में सड़क पर दो पक्षों में फायरिंग-पत्थरबाजी; राहगीर की मौत हो गई

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में चलती बाइक पर युवक को गोली लग गई। उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। युवक अपने दोस्तों के साथ सड़क पर दो पक्षों के बीच हो रही फायरिंग और पत्थरबाजी देखने रुका था। वह जाने लगा, तभी अचानक गोली और पत्थर उसके माथे पर आकर लगे। घटना गुरुवार-शुक्रवार की दरमियानी रात करीब 1:30 बजे नवीन दुर्गा मंदिर के पास की है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ बलवा और हत्या का केस दर्ज किया है।

इस वारदात को लेकर पूर्व मंत्री अंचल सोनकर सहित सैकड़ों लोगों ने जबलपुर के घमापुर थाने का घेराव कर दिया और विरोध जताया। दो पक्षों के बीच विवाद देखने रुके युवक की गोली लगने से मौत हो गई। उसका पोस्टमॉर्ट्म कराया गया।

राकेश गोटिया (32) चांदमारी में परिवार के साथ रहता था। राकेश इलेक्ट्रॉनिक कंपनी में सेल्समैन था। घुमापुर थाना प्रभारी सतीश अंधवान ने बताया, 'राकेश रात में अपने दोस्तों के साथ बाइक से जा रहा था। बाइक राकेश चला रहा था। नवीन दुर्गा मंदिर के पास बीच सड़क पर यश, अनमोल का करण और शिवा का किसी बात को लेकर विवाद हो रहा था। दोनों पक्ष बीच पथराव हो रहा था। यश के पास पिस्टल थी।

राकेश कुमार, मृतक

विवाद होते देख कुछ देर के लिए राकेश ने बाइक सड़क किनारे खड़ी कर दी। काफी देर तक दोनों पक्षों का विवाद होता रहा, तो राकेश साइड से बाइक निकालने लगा। इसी दौरान अचानक उनके ऊपर पथराव होने लगा। जैसे-तैसे बचते हुए आगे बढ़े ही थे कि राकेश के सिर पर गोली लग गई। इससे तीनों बाइक समेत गिर गए। राकेश के सिर से खून निकलते देख शुभम और सन्नी उसे जिला अस्पताल ले गए।'

डेढ़ घंटे पहले भाई ने किया था फोन- राकेश के भाई अमृत ने बताया, 'गुरुवार शाम राकेश (32) अपने दोस्त सन्नी की ससुराल ग्वारीघाट जाने की बात कहकर निकला था। उसके साथ रात करीब साढ़े 11 बजे फोन कर पूछा, तो राकेश ने बताया कि वह घर के लिए निकल रहा है। एक घंटे में पहुंच जाएगा। रात में करीब 1:30 बजे सन्नी का फोन आता है कि जिला अस्पताल आ जाओ, राकेश का एक्सीडेंट हो गया है। यहां पहुंचे, तो उसकी मौत हो चुकी थी।'

आरोपियों की तलाश के लिए बनाई तीन टीमें- सीएसपी राजेश कुमार राठौर का कहना है कि सन्नी गोटिया की शिकायत पर चारों आरोपियों के खिलाफ हत्या और बलवा का मामला दर्ज किया है। आरोपियों को पकड़ने के लिए तीन टीमें बनाई गई हैं। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजन को सौंप दिया है।

जबलपुर में घमापुर थाने का घेराव- राकेश गोटिया की हत्या को लेकर पूर्व मंत्री अंचल सोनकर सहित सैकड़ों लोगों ने घमापुर थाने का घेराव किया और पुलिस पर गंभीर आरोप लगाए हैं। पूर्व मंत्री का कहना है कि यहां पर अपराधी खुलेआम लोगों की हत्या कर रहे हैं और पुलिस मौन बैठी हुई है। घमापुर थाना पुलिस का कहना है कि राकेश गोटिया हत्या मामले में एक आरोपी शिवा को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि अन्य की तलाश की जा रही है।

एअर इंडिया ने तेल अवीव की सभी फ्लाइट्स की सस्पेंड

- **इजरायल और ईरान में बढ़ा तनाव तो लिया कंपनी ने फैसला**

नई दिल्ली(एजेंसी)। ईरान में हमास सरगना की मौत के बाद इजरायल के साथ उसके तनाव बढ़ते दिख रहे। मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में चल रही स्थिति को देखते हुए, एअर इंडिया ने बड़ा फैसला लिया है।

एअर इंडिया ने 8 अगस्त तक तेल अवीव से आने-जाने वाली अपनी फ्लाइट्स के निर्धारित संचालन को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया है। एयरलाइन मैनेजमेंट ने यात्रियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ये कदम उठाया। उन्होंने बताया कि हम लगातार स्थिति की निगरानी कर रहे हैं और इस अवधि के दौरान तेल अवीव से आने-जाने के लिए कन्फर्म बुकिंग लेने वाले अपने यात्रियों को जरूरी सहयोग प्रदान कर रहे हैं। ईरान-इजरायल में बढ़ते तनाव के बीच एअर इंडिया ने तेल अवीव के बीच फ्लाइट सस्पेंड किया है। इस दौरान कंफर्म टिकट ले चुके यात्रियों को फ्लाइट के रीशेड्यूल और कैंसिलेशन फी से जुड़ी फी पर एक बार की छूट शामिल है।

पूर्व सांसद बोले-रक्षाबंधन नहीं मनाने वालों को 250 रु. क्यों

सीएम ने कहा था- लाड़ली बहनों के खाते में 1250 के बजाय 1500 रुपए आएंगे

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरुवार को चित्रकूट में ऐलान किया था कि इस बार लाड़ली बहनों के खाते में 1250 रुपए के बजाय 1500 रुपए आएंगे। इसमें 250 रुपए रक्षाबंधन का तोहफा है। इस पर पूर्व सांसद और भाजपा के सीनियर लीडर रघुनंदन शर्मा ने ऐतराज जताया है। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन नहीं मनाने वाली लाड़ली बहनों के खाते में यह राशि नहीं डाली जाए।

रघुनंदन शर्मा ने शुक्रवार को भोपाल में मीडिया से चर्चा की। उन्होंने कहा, भाजपा सरकार उदार मन से काम करती है। खासकर महिलाओं के प्रति उदारता और अधिक है। सीएम डॉ. मोहन यादव अधिक संवेदनशील है। यह सही है कि रक्षाबंधन के त्योहार पर बहनों का विशेष खर्च होता है। इसे ही देखते हुए सीएम ने लाड़ली बहनों को दी जाने वाली राशि में वृद्धि की है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरुवार को चित्रकूट में यहां प्रदेश स्तरीय आभार सह-उपहार कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सीएम ने मंच से फूलों का तारों का सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है... गाना गाते हुए बहनों को राखी का उपहार दिया।

उन्होंने मंच से घोषणा की, 10 तारीख को सभी बहनों के खाते में इस बार साढ़े 12 की जगह 1500 रुपए आएंगे। ये 250 रुपए राखी के त्योहार के लिए हैं। जब बहनें अपने भाई को राखी बांधेंगी, तो मैं समझूंगा मेरे भी माथे पर तिलक लग गया, आनंद महसूस करेंगे। साथ ही, उज्जवला गैस कलेक्शन के लिए भी 40 लाख बहनों के खाते में 450 रुपए डाले जाएंगे।

जो रक्षाबंधन नहीं मनातीं, उन्हें राखी के पैसे नहीं दें

रघुनंदन शर्मा ने कहा, फिर भी इसमें एक बात है कि जो रक्षाबंधन में विश्वास करते हैं, जो हिंदू इस त्योहार को मनाते हैं, उसे इस राशि का लाभ मिलना चाहिए।

सीबीआई करेगी दिल्ली कोचिंग हादसे की जांच

- **दिल्ली हाईकोर्ट ने जारी किया आदेश, पुलिस को फटकारा**
- **कहा-बेवजह एसयूवी ड्राइवर को अरेस्ट किया, शुक्र है पानी का चालान नहीं**

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने शुक्रवार (2 अगस्त) को राव आईएएस कोचिंग हादसे की जांच सीबीआई को सौंप दी है। साथ ही सेंट्रल विजिलेंस कमेटी के अधिकारी को जांच की निगरानी करने के निर्देश दिए। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि लोगों को जांच पर शक न हो, साथ ही हादसे की गंभीरता, सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार में शामिल होने की संभावना के चलते यह फैसला लिया गया है। कुटुंब ट्रस्ट की याचिका पर दिल्ली हाईकोर्ट के एक्टिंग चीफ जस्टिस मनमोहन और जस्टिस तुषार राव की बेंच इस मामले की सुनवाई की। दिल्ली के राव आईएएस कोचिंग के बेसमेंट में स्थित लाइब्रेरी में पानी भरने से 27 जुलाई को तीन स्टूडेंट्स की मौत हो गई थी। इसके पहले कोर्ट ने दिल्ली पुलिस को फटकार लगाते हुए कहा था कि आप सड़क से गुजर रहे व्यक्ति को कैसे अरेस्ट कर सकते हैं। आपको माफी मांगनी चाहिए।

राजस्थान में न्यूक्लियर पावर प्लांट को लेकर हिंसा

विरोध कर रहे ग्रामीणों ने पुलिस पर कर दिया पथराव

जवानों ने आंसू गैस के गोले छोड़े,3 लोग हुए घायल

बांसवाड़ा (एजेंसी)। राजस्थान के बांसवाड़ा में प्रस्तावित न्यूक्लियर पावर प्लांट को लेकर स्थानीय लोगों ने भारी विरोध शुरू कर दिया है। प्लांट के लिए जमीन खाली करवाने गई पुलिस और लोगों के बीच हिंसा हो गई है। विरोध कर रहे स्थानीय लोगों ने पुलिस पर पथराव कर दिया तो पुलिस ने भी लोगों पर लाठीचार्ज किया और आंसू गैस के गोले छोड़े। दरअसल, बांसवाड़ा के छोटी सरवन में 2800 मेगावाट का न्यूक्लियर पावर प्लांट लगना है। यहां से लोगों को दूसरी जगह शिफ्ट किया जा रहा था। लोगों के विरोध को देखते हुए न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड ने पुलिस से जमीन खाली कराने के लिए मदद मांगी थी। बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ जिलों की पुलिस को मौके पर तैनात कर लोगों को हटाने की जिम्मेदारी दी गई थी। बताया जा रहा है कि अगस्त में इस प्लांट का शिलान्यास होना है। इसी कारण इन परिवारों को दूसरी जगह शिफ्ट कराया जा रहा था। जबकि स्थानीय लोग मांग पूरी होने तक हटने को तैयार नहीं थे।

विंडसर कार में फर्राटा भरेंगे ओलंपिक के मेडल विजेता

- **देश के एक बड़े बिजनेसमैन ने किया गिफ्ट का ऐलान**

नई दिल्ली (एजेंसी)। फ्रांस पेरिस में चल रहे ओलंपिक 2024 में भारत ने अब तक 3 पदक अपने नाम कर लिए हैं। भारत की ओर से मनु भाकर, स्वप्निल कुसाले, और सरबजोत सिंह ने शूटिंग में कांस्य पदक पर निशाना साधा है। अब भी भारत के कई खिलाड़ी पदक की रेस में हैं। इन खिलाड़ियों पर अभी से इनामों की बारिश होनी शुरू हो गई है। इस कड़ी में दिग्गज उद्योगपति और जेएसडब्ल्यू समूह के चेयरमैन सज्जन जिंदल ने पदक विजेताओं को एक ब्रांड न्यू लग्जरी कार उपहार में देने का वादा किया है। सज्जन जिंदल ने एक एक्स पोस्ट पर घोषणा की है कि वह 2024 के पेरिस ओलंपिक में हर भारतीय पदक विजेता को एमजी विंडसर गिफ्ट करेंगे। उन्होंने कहा है कि एथलीट अपने समर्पण और सफलता के लिए सबसे बेस्ट इनाम के हकदार हैं। मॉरिस गैरेज इंडिया ने जेएसडब्ल्यू ग्रुप के साथ मिलकर अपने नए सीयूवी एमजी विंडसर के भारत में लॉन्च की घोषणा की थी। उसके बाद सज्जन जिंदल ने यह फैसला लिया है। सज्जन जिंदल ने अपने एक्स पोस्ट पर लिखा, यह घोषणा करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है।

शेल्टर होम में 20 दिन में 14 बच्चों की मौत

केजरीवाल सरकार ने दिए जांच के आदेश,बीजेपी हमलावर

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार के आशा किरण शेल्टर होम में 20 दिनों में 14 बच्चों की मौत हो गई है। बच्चों की मौत को लेकर फैक्ट फाइंडिंग टीम का गठन किया गया है। दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी ने मजिस्ट्रेट जांच के आदेश दिए हैं। दिल्ली के रोहिणी इलाके में दिल्ली सरकार का आशा किरण शेल्टर होम है। जहां महज 20 दिन के भीतर ही 14 बच्चों की मौत हो गई है। इसको लेकर आतिशी ने कहा कि उनको मीडिया रिपोर्ट्स से जानकारी मिली है कि दिल्ली के रोहिणी स्थित आशा किरण शेल्टर होम में 14 बच्चों की मौत हुई है। बच्चों की मौत को लेकर कहा जा रहा है कि उनकी मौत कुपोषण और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं रही हैं। इस बात से ये पता चलता है कि बच्चों को उचित सुविधाएं नहीं मिल पार रही हैं। इसके साथ ही आतिशी ने यही कहा कि ये खबर बहुत आश्चर्य करने वाला है। क्योंकि देश की राजधानी दिल्ली में इस तरह की घटनाएं हो रही हैं।

एसजीएसआईटीएस में हर साल 25 हजार सीड बॉल बना रहे स्टूडेंट

इंदौर में फ्री बांट रहे, ताकि लोग जहां-जाएं इसे फेंकें और पेड़ तैयार हों

इंदौर (एजेंसी)। श्री गोविंदराम सेकसिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस कॉलेज (एसजीएसआइटीएस) पिछले कई सालों से संस्थान पर्यावरण संरक्षण के लिए काम कर रहा है। इसी कड़ी में बीते पांच साल से कॉलेज कैंपस में सीड बॉल्स तैयार की जा रहे हैं। इनमें मोरसली, नीम, जामुन, इमली आदि के बीज रहते हैं। एक एक्सपेरिमेंट ने सीड बॉल्स के ग्रोथ होने के रेट को 80 प्रतिशत पहुंचा दिया। संस्थान के मीडिया व गार्डन इंचार्ज एलेक्स कुट्टी, पिछले पांच सालों से सीड बॉल तैयार करने के काम में लगे हैं। हर साल बारिश के पहले उनका ये काम शुरू हो जाता है। इस काम में संस्थान के स्टूडेंट, गार्डन की देखरेख करने वाले भी उनकी मदद करते हैं।

उन्होंने बताया कि 2019 में वे सिर्फ काली मिट्टी से ही सीड बॉल तैयार करते थे। मगर काली मिट्टी सूखने के बाद उसमें दरारें आ जाती थी। ऊंचाई से फेंकने पर बॉल टूट जाते थे। कभी गोबर की खाद, तो कभी पत्तियों की खाद तो कभी कुछ अन्य चीजें मिलाकर उन्होंने सीड बॉल तैयार की। मगर मिट्टी की वह पकड़ नहीं मिल पाई। पुट्ठे का भी इस्तेमाल किया, मगर सफल नहीं हो सके। खाद के कारण बीज समय से पहले ही अंकुरित हो जाते, या कई बार टूटने से अंकुरित ही नहीं हो पाते। उन्होंने इंटरनेट पर सर्च करके भी कई तरीके अपनाए पर सफलता नहीं मिली।

2022-23 में एक्सपेरिमेंट हो गया सफल

एलेक्स ने बताया कि 2022 में वेस्ट पेपर लिए उन्होंने पानी में गलाया और जब कागज गल गया तो उसे सीड बॉल तैयार करने में उपयोग किया। उन्होंने एक-एक-एक के रेश्यो में काली मिट्टी, खाद और गला हुआ कागज का इस्तेमाल किया। इसे मिलाकर इसमें बीज डाले और बॉल तैयार की। 25 फीट नीचे फेंककर तो कभी ऊपर फेंककर टेस्ट भी किया। मगर सीड बॉल टूटी नहीं और उसके बीज समय के साथ वे अंकुरित हो गए। इस सफल एक्सपेरिमेंट के बाद से ही गले हुए कागज का इस्तेमाल करने लगे। इसका सक्सेस रेट उन्हें 80 प्रतिशत मिला।

एक सीड बॉल करीब 150 ग्राम की

कुट्टी ने बताया कि एक सीड बॉल करीब 150 ग्राम की बनती है। इसमें 50 ग्राम काफी मिट्टी, 50 ग्राम खाद और 50 ग्राम गला हुआ कागज रहता है। संस्थान में वेस्ट पेपर को एक ड्रम में रखकर वह पानी डालकर उसे गलाते हैं। इसके साथ ही मिट्टी, खाद और इस गले कागज को मिलाकर जरूरत पड़ने पर रोलर की मदद से दबा दिया जाता है, नहीं तो उसे गूंथ कर मिला लिया जाता है। इसके बाद इस मिश्रण में अलग-अलग तरह के बीज डालकर इसकी बॉल तैयार कर ली जाती है। इसके बाद इन बॉल को सूरज की रोशनी में सुखाया जाता है।

कॉलेज में तैयार कर रहे सीड बॉल्स। इन्हें जनता को मुफ्त में दिया जा रहा है।हर साल करीब 25 से 30 हजार सीड बॉल यहां तैयार किए जा रहे हैं। जो भी हमें बीज उपलब्ध कराते हैं, हम उन्हें सीड बॉल्स तैयार कर वापस भी देते हैं।

स्टूडेंट्स का क्या है कहना

बायो मेडिकल की स्टूडेंट व संस्थान के नेचर्स क्लब से जुड़ी वंशिका शर्मा ने बताया कि हम बंजर स्थानों पर जहां पेड़ नहीं होते हैं वहां फेंकते हैं। सुहानी पाटीदार ने बताया कि कई स्थान है जहां पेड़ों की कमी है। इसलिए संस्थान की तरफ से हम सीड बॉल तैयार कर रहे हैं।कुट्टी ने बताया कि संस्थान में अलग-अलग स्कूलों के स्टूडेंट भी यहां विजिट पर आते हैं। उन्हें भी सीड बॉल बनाना सिखाया जाता है, ताकि वे भी अपने-अपने स्थान पर इन सीड बॉल को तैयार कर सकें।

रेवति रेंज पहुंचे मंत्री विजयवर्गीय, बोले-

12 लाख पौधों को जीवित रखने का रिकॉर्ड बनाएगा इंदौर, कोई पेड़ मुरझाया नहीं, यही बड़ी सफलता

इंदौर (एजेंसी)। स्वच्छता, स्वाद एवं सुशासन के बाद इंदौर की पहचान अब ग्रीन सिटी के रूप में हो रही है। मैं यह कहते हुए गर्व से भरा हूं कि रेवती रेंज पर हमनें जो 12 लाख 40 हजार पौधे लगाकर विश्व कीर्तिमान बनाया था, उसके अब सुखद एवं सकारात्मक परिणाम सामने आने लगे हैं। यह बात मध्यप्रदेश के नगरीय विकास एवं आवास तथा संसदीय कार्य मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय जी ने गुरुवार को कही।

मंत्री विजयवर्गीय रेवती रेंज पर हुए पौधरोपण को देखने पहुंचे थे। इस अवसर पर उन्होंने लगाए गए पौधों की सेहत देखी और नगर निगम के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इस दौरान मंत्री विजयवर्गीय ने कहा कि हमने रेवती रेंज पर पौधरोपण का जो वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था, उनमें से एक भी पौधा मुरझाया नहीं है। कनेर में फूल आ गए हैं। ये इतनी अच्छी फुलवारी होगी, जब यहां लाखों पेड़ों में फूल लगेंगे। बेहतरीन सेल्फी पाइंट होगा। मंत्री ने आगे कहा कि 17 दिन के अंदर पेड़ आत्मनिर्भर हो गए हैं। नई कोपलें फूटने लगी हैं। एक भी पेड़ मुरझाया नहीं, यही हमारी बड़ी सफलता है। हमने मधु कामिनी के साढ़े सात लाख पौधे लगाए हैं, इनमें फूल आना शुरू हो गए हैं, जब इन साढ़े सात लाख पौधों में फूल लगेंगे तो पूरा इलाका महक उठेगा। आप यहां आकर प्रसन्न हो जाएंगे।

इंदौरवासियों को बहुत-बहुत बधाई

विजयवर्गीय ने कहा कि मैं इंदौरवासियों को बधाई देता हूं कि आपके द्वारा लगाए गए पौधों में से एक भी पौधा मुरझाया नहीं है। ये हमारा अभियान है, यह आपके सहयोग से ही सफल हो रहा है। हम रिकॉर्ड बनाएंगे एक बार फिर कि हमने 12 लाख 40 हजार पौधे सौ फीसदी जीवित रखे हैं। इसके लिए मैं, मेरा परिवार, नगर निगम हम सब मिलकर काम करेंगे।

इंदौर में लैबेरोटरी कर्मचारी को लूटा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के बाणगंगा में जॉब पर जा रहे एक लैबोरेटरी के कर्मचारी को नाबालिग बदमाश ने डरा धमकाकर लूट लिया। वारदात कंपनी के पास में हुई। मदद को लेकर परिचित दोस्त ओर अन्य लोग आए है। जिसमें बदमाश को कुछ ही देर में पकड़ लिया गया। उससे पूछताछ की जा रही है।

बाणगंगा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक सुमित पुत्र जगदीश योगी निवासी वृंदावन कॉलोनी ने बताया कि वह गुरुवार दोपहर 3 बजे के लगभग पैदल इप्का लैबोरेटरी कंपनी ड्यूटी पर जा रहा था। इस दौरान पोलो ग्राउंड नाले के पास पहुंचा। यहां एक लड़का मिला। जिसने डरा धमकाकर पेंट की जेब में रखे 5 हजार रूपए छीन कर रख लिये ओर चाकू दिखाकर भगा दिया। वह जल्दी में कंपनी पहुंचा।

यहां पर बाहर दोस्त कान्हा ओर अन्य लोग मिले। उन्हें पूरी घटना बताई। इसके बाद दोस्तों से लड़के का पीछा किया। उसे पकड़ा और आसपास के लोगो को बताया कि लड़का लूट कर भागा है। आरोपी ने बताया कि वह बादल के भट्टे में रहता है। इसके बाद उसे पुलिस के सुपुर्द किया गया। पुलिस के मुताबिक आरोपी नाबालिग है। उस पर लूट और मारपीट के भी अपराध है।

प्रदूषण विभाग करेगा सर्वे

रहवासी क्षेत्रों में चल रही अवैध फैक्टरियां हटाएंगे

इंदौर (एजेंसी)। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड शहर के रहवासी और व्यावसायिक इलाकों में अवैध रूप से चल रही फैक्टरियों को हटाने के लिए कार्रवाई करेगा। सरकार से मिले निर्देश के बाद बोर्ड पूरे शहर में उत्पादन यूनिटों के लिए सर्वे करेगा। दरअसल शहर के रहवासी इलाकों में कई जगहों पर छोटी-छोटी फैक्टरियां चल रही हैं। इनमें सुरक्षा उपाय नहीं हैं। इससे हादसे का खतरा बना रहता है। साथ ही इनसे निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थों से आसपास का वातावरण दूषित हो रहा है। मशीनों का शोर, वाहनों की आवाजाही से अन्य परेशानियां भी लोगों को होती हैं। इनके पास फैक्टरी एक्ट के तहत अनुमति भी नहीं है। यह असुरिक्षत तरीके से गैस व अन्य ज्वलनशील पदार्थों का उपयोग कर रहे हैं।

हीरानगर थाने के हेड कांस्टेबल की पत्नी ने किया सुसाइड

देर रात मौके पर पहुंचे अफसर, पुलिस जांच में जुटी पर मर्ग कायम नहीं किया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के हीरानगर थाने में पदस्थ एक हेड कांस्टेबल की पत्नी ने बुधवार रात सुसाइड कर लिया। वह घर पर अकेली थी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिये अरविंदो अस्पताल भेजा है। हीरानगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक हीरानगर थाने में हेड कांस्टेबल सौरभ बघेल की पत्नी मनीषा ने गुरुवार को आत्महत्या कर ली। सौरभ प्रीमियम पेराडाइज में रहता है। पुलिस के मुताबिक वह ड्यूटी के दौरान परिवार को समय

नहीं दे पा रहा था। जिसे लेकर दंपती में तनाव बढ़ रहा था। मौके से सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है। उसके परिवार में दो बच्चे हैं। देर रात मामले की जानकारी लगने पर अफसर भी सौरभ के घर पहुंचे। मामले में बाणगंगा थाने पर मर्ग कायम नहीं कराया गया है। स्थानीय पुलिस को जानकारी नहीं है। एडिशनल कमिश्नर अमित सिंह ने इस मामले में पुष्टि की है।

आईआईटी-इंदौर को बम से उड़ाने की धमकी देने वाला पकड़ाया

पुलिस से कहा- इंटरव्यू में रिजेक्ट हुआ इसलिए डराया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के आईआईटी को बम से उड़ाने की धमकी देने वाले एक आरोपी को पुलिस ने शुक्रवार सुबह पकड़ा है। आरोपी ने डराने के लिये यहां पर ई-मेल भेजा था। पुलिस जल्द ही पूरे मामले में खुलासा करेंगे। सिमरोल स्थित आईआईटी को 17 जुलाई को बम से उड़ाने का धमकी भरा ईमेल मिला था। इस मामले में डीएसपी उमाकांत चौधरी और अन्य अफसर मौके पर पहुंचे। साइबर की टीम को भी जांच में लगाया गया। इस मामले में चेतन सोनी निवासी इंदौर को पकड़ा है। वह मूल रूप से

आईएसआई एजेंट के नाम से भेजा था मेल

बड़नगर (उज्जैन) का रहने वाला है। आरोपी ने 2022 में आईआईटी में नौकरी के लिए आवेदन दिया था। लेकिन वह रिजेक्ट हो गया। चेतन ने कहा कि मैंने इसी से गुस्से में आकर दहशत का माहौल बनाने के लिए ईमेल भेजा। इसके चलते पूरे परिसर में दहशत फैल गई थी। यूजर द्वारा उक्त ई-मेल आईआई डी. से एक धमकी भरा ई- मेल किया। इसमें 15 अगस्त को बम ब्लास्ट करने की धमकी दी गई थी। मेल भेजने वाले ने खुद को पाकिस्तान का आईएसआई एजेंट बताया था। चेतन ने मैसेज को लेकर पूछताछ में बताया कि साल 2022 सितम्बर अक्टूबर में आई.आई.टी. सिमरीन इंदौर में नोकरी हेतू इंटरव्यू दिया था जिसमे सेलेक्शन नहीं होने से गुस्से में आकर आई.आई.टी. सिमरोल में हर का माहौल बनाने के लिये धमकी भरा मैसेज किया था।अफसर इस मामले की प्रेस कान्फ्रेंस कर खुलासा करेंगे।

इंदौर-उज्जैन के बीच भी चले वंदे भारत मेट्रो ट्रेन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की रेल कनेक्टिविटी और यात्री सुविधाएं बढ़ाने को लेकर सांसद शंकर लालवानी गुरुवार को रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव से मिले। उन्होंने इंदौर-उज्जैन के बीच मेट्रो वंदे भारत, इंदौर से दिल्ली, मुंबई के बीच स्लीपर वंदे भारत चलाने की मांग की। इसके साथ ही इंदौर-जयपुर के बीच वंदे भारत ट्रेन मांगी। इंदौर से दरभंगा और इंदौर-दिल्ली सुपरफास्ट को प्रतिदिन करने की बात की।

ये मुद्दे भी मंत्री के सामने रखे- इंदौर-मनमाड़ रेल लाइन को लेकर कहा कि इस लाइन के बनने से प्रदेश और महाराष्ट्र के बीच कनेक्टिविटी बेहतर होगी

इंदौर-पीथमपुर गतिशक्ति कार्गो का निर्माण हो- राऊ, मांगलिया, राजेंद्र नगर और चंद्रावतीगंज स्टेशनों को अमृत योजना में शामिल कर विकसित किया जाए

कोविड के बाद से गौतमपुरा स्टेशन पर रेल के स्टॉपेज नहीं दिए गए हैं, इससे ग्रामीणों को दिक्कत होती है। इसे शुरू किया जाए।

डीआरपी कंपनी के संचालक ने मुनाफे के नाम पर 20 लाख ठगे

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर की भंवरकुंआ पुलिस ने 82 साल के बुजुर्ग की शिकायत के मामले में डीआरपी कंपनी के संचालक के खिलाफ धोखाधड़ी सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज किया है। बुजुर्ग से रिटायरमेंट के बाद इन्वेस्टमेंट के नाम पर आरोपी ने 20 लाख रुपए ठगे। इस मामले में रुपए नहीं देकर गार्ड से गोली मारने की धमकी बुजुर्ग को दी। बुजुर्ग ने थाने में शिकायत की। इसके बाद केस दर्ज किया गया। भंवरकुआ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक ओमप्रकाश पुत्र ब्रजमोहन शर्मा निवासी नंदानगर की शिकायत पर शरद पुत्र दिनेश पोरवाल निवासी साठ फीट रोड़ आइडियल स्कूल के सामने द्वारकापुरी पर 420,406,294,506 भादवि की धारा में केस दर्ज किया है।

नर्सिंग के स्टूडेंट ने किया सुसाइड, दो दिन पहले ही गांव से इंदौर आया था

जांच में जुटी पुलिस

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के आजाद नगर में रहने वाले एक नर्सिंग स्टूडेंट ने फांसी लगाकर जान दे दी। गुरुवार शाम दोस्त ने उसे फंदे पर लटके देखा तो एमवाय अस्पताल लेकर पहुंचा। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बताया जाता है कि दो दिन पहले मंगलवार ही अपने गांव से इंदौर लौटा था। गुरुवार को वह कॉलेज नहीं गया। आजाद नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक स्टूडेंट का नाम रोहित (20) पुत्र करण भिलाला निवासी आईडीए बिल्डिंग मूसाखेड़ी है। रोहित मूल रूप से देवलरा मनावर के पास का रहने वाला है। रोहित गुरुवार को कॉलेज नहीं गया। वह अपने रूम पर अकेला था। शाम को दोस्त रूम पर पहुंचा तो उसे फंदे पर देखा। पुलिस को कमरे से किसी तरह का सुसाइड नोट नहीं मिला है। शव को पोस्टमार्ट्म के लिए एमवाय भेजा गया है।

दो दिन पहले इंदौर आया

रोहित इंडेक्स मेडिकल कॉलेज में नर्सिंग कोर्स के सेकंड ईयर में पढ़ाई कर रहा था। उसके पिता किसान हैं। रोहित दो दिन पहले तक अपने माता-पिता के पास ही था। घर से आने के बाद वह कॉलेज नहीं गया। उसकी सेमेस्टर एग्जाम शुरू होने वाले थे। पुलिस के मुताबिक उसका मोबाइल जब्त किया गया है। जांच की जा रही है।

तीन वाहन चोर पकड़ाए, चोरी के 15 वाहन बरामद

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर क्राइम ब्रांच ने तिलकनगर, लसूड़िया, शिप्रा और बाणगंगा से टू व्हीलर वाहन चुराने वाले तीन आरोपियों को पकड़ा है। आरोपियों से चोरी के करीब 15 वाहन मिले हैं। आरोपियों को कार्रवाई के लिये तिलक नगर पुलिस के सुपुर्द किया गया है। एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया के मुताबिक क्राइम ब्रांच ने दिनेश पुत्र नानूराम राठौर निवासी कालिंदी गोल्ड, कल्याण उर्फ कालू पुत्र अशोक गूंदराज निवासी तिरुमला कॉलोनी और अजय उर्फ विक्की पुत्र ताराचंद विश्वकर्मा निवासी मिल हनुमान मंदिर सांवेर को पकड़ा है। आरोपियों के पास से करीब 15 दो पहिया वाहन मिले हैं। दिनेश पहले भी 32 दो पहिया वाहन चोरी के मामले में जेल जा चुका है। कल्याण नशा करने का आदी है। जो हत्या के मामले में आरोपी है। नशे को लेकर उसने गैंग बनाई और चोरी के वाहनों को छिपाकर रखने लगे। ग्राहकों को वह सस्ते दामों पर बेचकर नशा करते थे।

अवैध मकानों का मामला

कृष्णबाग कॉलोनी के 16 मकानों से स्टे हटा, 6 को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के बाद कार्रवाई

इंदौर (एजेंसी)। न्याय नगर संस्था की जमीन पर बने 16 अवैध मकानों को हटाने पर लगा स्टे हाई कोर्ट ने खारिज कर दिया है। हालांकि यहां रिमूवल की कार्रवाई अभी नहीं होगी। 6 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट में मामले की सुनवाई होना है। वहां से आने वाले आदेश के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।पूर्वी रिंग रोड पर न्याय नगर की एक खतरे की 77 हजार वर्ग फीट जमीन पर 71 मकान अवैध रूप से बना लिए गए थे। हाई कोर्ट की डबल बेंच के आदेश पर पिछले सप्ताह 12 से 13 मकान तोड़े गए थे। इसके बाद रहवासियों ने सुप्रीम कोर्ट में 6 अगस्त को सुनवाई का हवाला दिया। तय हुआ था कि 6 को सुनवाई में यदि रहवासियों को राहत नहीं मिलती है तो 7 अगस्त को कार्रवाई होगी, क्योंकि प्रशासन को 8 अगस्त तक हाई कोर्ट में अपनी रिपोर्ट देनी

है। इधर हाई कोर्ट में प्रशासन की कार्रवाई के खिलाफ लगी याचिका में प्लॉटधारकों को राहत नहीं मिली है। चूंकि 24 जून को हाई कोर्ट की एकल पीठ ने प्रशासन की कार्रवाई पर रोक लगा दी थी। बिल्डर ने इस आदेश को चुनौती देते हुए डबल बेंच में अपील दायर की थी। वहां स्टे निरस्त हो गया।

अभी 58 से ज्यादा मकान या निर्माण तोड़े जाना हैं- प्रशासन को अभी यहां करीब 58 मकानों पर कार्रवाई और करना है। 47 लोगों ने सिंगल बेंच से स्टे लिया था। इनमें से इन 16 मकानों को तोड़ने का रास्ता साफ हो गया है। हाई कोर्ट में अपीलकर्ता श्रीराम बिल्डर्स की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता वीके जैन और पद्मनाभ सक्सेना ने पैरवी की।

जिनकी जमीन नहीं थी, डर के कारण वे भी स्टे ले आए- एसडीएम घनश्याम धनगर ने बताया कि कार्रवाई को लेकर यह बात फैल गई कि पूरी कॉलोनी के मकान टूटेंगे, जबकि कोर्ट द्वारा दिए गए फैसले में एक तय खसरे के ही निर्माण हटाए जाने हैं। कार्रवाई के डर से जिनकी जमीन नहीं थी, वे भी कोर्ट चले गए और अग्रिम स्टे ले आए।

बहू ने लगाया 700 ग्राम सोना बेचने का आरोप

व्यापारी पति, सास और ननद के खिलाफ शिकायत लेकर थाने पहुंची महिला

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के अन्नपूर्णा थाने में एक महिला ने गुरुवार रात पति, सास और ननद के खिलाफ दहेज प्रताड़ना का केस दर्ज कराया है। महिला का आरोप है कि उसके ससुराल के लोगो ने ज्वैलर पिता द्वारा दिया गया 700 ग्राम सोना ठिकाने लगा दिया। अन्नपूर्णा पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक लवली गुप्ता, निवासी सेक्टर ई सुदामा नगर की शिकायत पर पुलिस ने पति अभिषेक गुप्ता, सास रेखा गुप्ता, ननद आकांक्षा गुप्ता के खिलाफ 85,115 (2), 351(3), 329(4), 3(5) बी.एन.एस की धाराओं में केस दर्ज किया है। पुलिस ने बताया कि आरोपियों ने बहू को मानसिक प्रताड़ित कर दहेज की मांग की व अपशब्द कहे व मारपीट कर जान से मारने की धमकी देते हुए अपने ही घर में नही घुसने दिया। पीड़िता लवली गुप्ता ने अपनी शिकायत में बताया कि 24 जून 2012 को सामाजिक रिति-रिवाज से उसकी अभिषेक से हुई। जिसमें दो बेटे (12) और (8)साल के है। लवली ने पुलिस को बताया कि ननद आकांक्षा 2013 में ससुर की मौत के बाद प्रॉपर्टी में हिस्सा लेने के लिये परेशान करती है। ननद कहती है कि तेरा पैर खराब है। तेरे आने के बाद पिता की मौत हो गई। हमेशा किसी ना किसी बहाने से ताने मारती है। पीड़िता ने बताया कि उसके पिता का अंबा गांव भिंड में ज्वेलरी का काम है। शादी में सोने के करीब 700 ग्राम के जेवर दिए गए। सास रेखा और पति अभिषेक ने ये जेवर बेच दिए। ससुर की भिंड के पास ही पुश्तैनी प्रॉपर्टी थी। जिसे बेचकर पति अभिषेक और सास ने सुदामा नगर में 1400 स्क्वायर फीट का तीन मंजिला मकान लिया। इसमें रजिस्ट्री के समय रुपए की जरूरत लगी। तब पति,सास ने कहा कि पिता से रूपए लेकर आओ। पिता से उस समय 5 लाख रुपए लाकर दिए। इस मकान की रजिस्ट्री में पति अभिषेक के साथ लवली और रेखा के नाम से रजिस्ट्री हुई। वही बाद में अभिषेक ने इंदौर में व्यापार के लिए पिता अनिल गुप्ता से पेमेंट लाने के लिए कहा। उस समय पिता से बात की और उन्होंने कैट रोड़ पर अभिषेक को सीमेंट का व्यापार डालने के लिए मदद की। इसका पूरा बैंक स्टेटमेंट पीड़िता के पास है। उसके बाद भी पति और सास द्वारा परेशान किया जा रहा है। पति अभिषेक आए दिन क्रूरता करता है और बच्चों के सामने मारपीट करता है। पति और सास ने दोनों बच्चो सहित घर से निकाल दिया। जिस हिस्से की रजिस्ट्री पीड़िता के नाम से थी, उस पर ताला लगा दिया। इस मामले में लवली ने गुरुवार को डीसीपी ऋषिकेश मीना को शिकायत की। उनकी शिकायत के बाद लवली को थाने भेजा गया। यहां पुलिस ने व्यापारी पति और अन्य लोगों पर केस दर्ज कर लिया।

संपादकीय

हानिया की हत्या के मायने

ईरान की राजधानी तेहरान में हमास चीफ इस्माइल हानिया की हत्या के बाद मध्यपूर्व में हालात और संगीन हो गए हैं। दुनिया में विश्वयुद्ध का खतरा और तेजी से मंडराने लगा है। यह हत्या ईरान के लिए शर्मनाक है, क्योंकि हानिया को 150 ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड की सुरक्षा के बावजूद बड़ी सफाई से मार दिया गया। जबकि हानिया ईरानी राष्ट्रपति पेजेश्कियान के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लेने के लिए तेहरान में था। ईरान ने इस हत्या का बदला लेने की न सिर्फ धमकी दी है, बल्कि मिसाइल हमला भी किया है। हालांकि इससे इजराइल का ज्यादा नुकसान हुआ है, ऐसा नहीं लगता। उसने भी हर स्थिति का सामना करने की तैयारी दिखाई है। हानिया की हत्या हमास जैसे आतंकी संगठन को तगड़ा झटका लगा है। 62 वर्षीय हानिया को पूरे हमास समूह का नेता माना जाता था। वो 1980 के दशक से ही इसका एक प्रमुख सदस्य था। हमास का पॉलिटिकल ब्यूरो क़तर में होने से हनिया के नेतृत्व में यह संगठन क्षेत्र की तमाम सरकारों तक अपनी पहुंच रखता था। हालांकि हानिया हमास के सैन्य अभियानों का कमांडर नहीं था। लेकिन ईरान और पूरे मध्य-पूर्व में हमास के प्रॉक्सी गुटों के साथ तालमेल का ज़िम्मा हनिया का ही था। इसके पहले इजराइल ने अपने हमले में हानिया के सभी नाते रिश्तेदारों को भी मार दिया था। हानिया की हत्या कैसे हुई, इसको लेकर भी कई कहानियां सामने आ रही हैं। पहले कहा गया था कि उसकी हत्या मिसाइल से हुई है। लेकिन ईरानी जांच एजेंसियों ने जो खुलासा किया है, वह चौंकाने वाला है। इसके मुताबिक हानिया को मारने का प्लान दो माह पहले ही बन चुका था। उसे मारने के बम तस्करी से लाया गया था और इस रिमोट कंट्रोल बम को यथास्था न पहले ही फिट कर दिया गया था। जिसका पता ईरानी खुफिया एजेंसियां नहीं लगा पाई। सही मौके पर रिमोर्ट कंट्रोल से बम विस्फोट कर हानिया को मार दिया गया। हानिया की हत्या पर इजराइल ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। लेकिन इसे इसराइल की पूर्व में खाई कसम से जोड़कर देखा जा रहा है, जिसमें उसने इजराइल पर सात अक्टूबर के भयानक हमलों के बाद सभी हमास नेताओं को ढूंढ़ने और सज़ा देने की कसम खाई थी। अब सवाल यह है कि इस घटना से गाजा में युद्ध विराम की कोशिशों का क्या होगा? अमेरिकी अधिकारियों ने हाल ही में कहा था कि युद्धविराम पर बातचीत जल्द ही सफल हो सकती है, हालाँकि पिछले सप्ताह इटली के रोम में हुई बैठक में इस मामले में कोई सफलता नहीं मिली थी। नई परिस्थिति में गजा में शांति की संभावनाएं लगभग धूमिल हो चुकी हैं। कहा जा रहा है कि अब ईरान की सेना सीधे इजराइल पर हमला करेगी। यह हमला हिजबुल्लाह के ठिकाने लेबनान से किया जा सकता है। यद्यपि यह इतना आसान नहीं होगा, क्योंकि अमेरिका इस मामले में पूरी तरह इजराइल के साथ खड़ा है। इजराइल ने भी एक साथ कई मोर्चे खोल दिए हैं। उसने हमले की प्रत्याशा में अपना डोम सिस्टम सक्रिय कर दिया है। यानी इजराइल को भारी प्रतिक्रिया की उम्मीद है और उसने जवाबी कार्रवाई करने का मन भी बना रखा है। कुल मिलाकर दोनों पक्ष बदले की आग में जल रहे हैं। अगर ईरान और इजराइल के बीच सीधी टक्कर की नौबत आई तो यह युद्ध दूसरे देशों में फैल सकता है, जिसकी चपेट में सबसे पहले अरब देश आएंगे। इनमें से कई के तो इजराइल से अच्छे रिश्ते हैं और जो ईरान को मुसलमानों का नेता नहीं बनने देना चाहते। कुल मिलाकर पश्चिम एशिया में शांति के आसार और धुंधला गए हैं।

नजरिया

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आरक्षण के भीतर आरक्षण की व्यवस्था का अहम फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने अनुसूचित जातियों-जनजातियों यानी एससी-एसटी समुदाय में आरक्षण के भीतर आरक्षण का रास्ता साफ करके आरक्षण की व्यवस्था को तार्किक, न्यायसंगत, समानतापूर्ण बनाने का सराहनीय कार्य किया है। न्यायालय के इस तरह के फैसले मिसाल ही नहीं, मशाल बन कर सामने आ रहे हैं, जिससे राष्ट्र की विसंगतियों एवं विडम्बनाओं से मुक्ति की दिशाएं उद्घाटित हो रही है। यह फैसला कई बिल्कुल अलग-अलग वजहों से अहम माना जा रहा है। क्योंकि बड़ा सच यह है कि ओबीसी समाज की तरह एससी-एसटी समुदाय में भी कई जातियों की आर्थिक-सामाजिक स्थिति न केवल कहीं कमजोर है, बल्कि उन्हें अपने ही वर्ग की अन्य जातियों से भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है। यह एक ऐसी सच्चाई है, जिससे कोई इंकार नहीं कर सकता। यह भी एक तथ्य है कि एससी-एसटी समुदाय में कई जातियां ऐसी हैं, जिन्हें आरक्षण का न के बराबर लाभ मिला है। ऐसा इसीलिए हुआ है, क्योंकि आरक्षण का अधिक लाभ इन वर्गों की अपेक्षाकृत समर्थ जातियां उठाती हैं। यही स्थिति ओबीसी में है। कई अति पिछड़ी जातियों तक आरक्षण का लाभ नहीं पहुंचा है। राजनीतिक एवं संवैधानिक विसंगतियों के कारण ऐसा होता रहा है।

सुप्रीम कोर्ट की सात सदस्यीय संविधान पीठ ने जहां छह-एक के बहुमत से एससी-एसटी आरक्षण में कोटे के भीतर कोटे को संविधानसम्मत बताया, वहीं चार न्यायाधीशों ने इन वर्गों के आरक्षण में उसी तरह क्रीमी लेयर की व्यवस्था लागू करने की भी आवश्यकता जताई, जैसी ओबीसी आरक्षण में है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने इस फैसले से 2004 के पांच सदस्यीय संविधान पीठ के फैसले को पलट दिया, जिसमें कहा गया था कि एससी-एसटी समुदाय एक जैसा है और उनकी विभिन्न जातियों में कोई भेद नहीं किया जा सकता। यह वस्तुस्थिति नहीं थी, इस विसंगति को सुधार कर सुप्रीम कोर्ट ने न्यायसंगत उपक्रम किया है। अब राज्यों एवं केन्द्र सरकार को बहुत सावधानी से कदम उठाने होंगे। इस ताजे फैसले के बाद अनेक राज्यों में जातिगत गणना की होड़ शुरु हो सकती है एवं राजनीति दलों में आरक्षण का मुद्दा नये आक्रामक रूप में उभर सकता है। लेकिन एक आदर्श समता, समानता एवं संतुलनमूलक समाज-व्यवस्था को निर्मित करने की दिशा में कोर्ट का यह फैसला अहम है।

संविधान पीठ के अनुसार, आरक्षण का मुख्य मकसद आर्थिक और सामाजिक समानता लाना है, पर इसके लिए शहर और गांव की सामाजिक हकीकत में अंतर के साथ आर्थिक पहलुओं को ध्यान में रखना जरूरी है। एससी समुदाय में भी दो बड़े वर्ग है, जिनमें गहरा फासला है। बड़े अफसरों और बड़े वकीलों के बच्चों की तुलना में मैला ढोने वाले बच्चों से करना कैसे न्यायसंगत हो सकता है? इसलिए पीछे रह गई जातियों को मुख्यधारा में लाने

के लिए ओबीसी की तर्ज पर एससी में भी कोटे के भीतर कोटे को न्यायाधीशों ने सांविधानिक माना है। आज के समय में इस फैसले की जरूरत को समझा जा सकता है, लेकिन समस्या यह है कि देश में 140 करोड़ जनसंख्या की सामाजिक स्थिति और आर्थिक हैसियत के आंकड़े स्पष्ट तौर पर उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या के आधार पर आनुपातिक आरक्षण की मांग बढ़ने से सामाजिक और राजनीतिक विद्वेष बढ़ सकता है। क्या इस फैसले से राज्यों में मनमानी बढ़ सकती है? अब नौजवानों से जुड़े अनेक मुद्दों जैसे रोजगार, कोचिंग, अग्निवीर, नीट, इंटर्नशिप, नकल और शिक्षा पर बहस के बीच इस फैसले से क्रीमीलेयर का मुद्दा फिर गरमा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने एससी-एसटी आरक्षण में उपवर्गीकरण करने का अधिकार राज्य सरकारों को भी दे दिया है। इस अधिकार का दुरुपयोग होने की आशंका भी है, क्योंकि सत्तारूढ़ राजनीतिक दल वोट बैंक बनाने के लालच में एससी-एसटी जातियों का मनमाना उपवर्गीकरण कर सकते हैं। राजनीतिक दलों को यह समझना होगा कि आरक्षण सामाजिक न्याय का जरिया है, न कि वोट बैंक की राजनीति का हथियार। वैसे भी अब तक देश में आरक्षण वोट बैंक को सुदृढ़ बनाने का हथियार बना रहा है और राजनीतिक दल इसका अनुचित लाभ उठाते हुए अपेक्षित समुदायों तक आरक्षण का लाभ नहीं पहुंचने दिया।

सुप्रीम कोर्ट के नये फैसले के बाद स्थितियां उग्र एवं आक्रामक होने के साथ प्रभावी भी होगी। इसलिये अब आरक्षण का कई पहलुओं से मूल्यांकन जरूरी हो गया है। वैसे फैसले में साफ कर दिया गया है कि किसी भी तरह का उप-वर्गीकरण स्पष्ट और भरोसेमंद डेटा के ही आधार पर ही किया जा सकता है। देखा जाए तो इस शर्त के जरिए फैसले का संकीर्ण एवं स्वार्थपूर्ण राजनीतिक हितों के लिए इस्तेमाल करने की संभावित कोशिशों पर अंकुश लगाने का प्रयास किया गया है। एससी, एसटी, ओबीसी, दिव्यांग, महिला, ईडब्ल्यूएस जैसी सभी वर्गों के आरक्षण को जोड़ा जाए, तो 99 फीसदी आबादी आरक्षण के दायरे में आ जाती है। चारों राज्यों में होने वाले चुनावों के मद्देनजर देखें, तो इस फैसले के बाद आरक्षण की राजनीति के साथ अदालतों में मुकदमेबाजी भी बढ़ सकती है, जिसका समाधान सूझबूझ एवं लोकतांत्रिक तरीके से करना होगा। अनुच्छेद-19 के तहत नागरिकों को पूरे देश में व्यवसाय और रोजगार का अधिकार है, इसलिए आरक्षण के माध्यम से न्याय और समानता स्थापित करने के लिए जातियों के व्यापक वर्गीकरण की राष्ट्रीय नीति को न्यायिक मान्यता देनी पड़ेगी।

आरक्षण के बावजूद अपेक्षित लोगों को इसका लाभ न मिलना संवैधानिक एवं राजनीतिक विसंगति का प्रमाण है। ताजे फैसले के बाद राज्य सरकारें अब अनुसूचित जाति व जनजाति वर्ग में भी आरक्षण के लिए अलग-अलग श्रेणियां बना सकती हैं। इस फैसले के बाद इन वर्गों में हाशिए पर पड़ी जातियों को आरक्षण का फायदा मिलने की उम्मीद जगी है। ऐसा इसलिए भी क्योंकि यह बात भी लगातार उठाई जा रही थी कि समुचित अवसर नहीं मिलने के कारण आरक्षित एससी-एसटी वर्ग में भी ऐसी कई जातियां हैं जो सामाजिक और आर्थिक तौर पर पिछड़ेपन से उबर नहीं पा रही हैं। आरक्षण के बावजूद भूमिहीन एवं निर्धन लोगों की स्थिति आज भी दयनीय एवं असंतुलित है। क्योंकि उच्च प्रशासनिक अधिकारियों के बच्चों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी स्थिति गांव में रहने वाले भूमिहीन-निर्धन-अभावग्रस्त लोगों के बच्चों जैसी है। सच यही है कि आरक्षण की व्यवस्था का फायदा भी एससी/एसटी श्रेणी के तहत आने वाली सभी जातियां समान रूप से नहीं उठा सकीं। ताजा फैसला इस सचाई को स्वीकार करते हुए राज्य सरकारों के लिए यह गुंजाइश बनाता है कि वे इस व्यवस्था का फायदा उन तबकों तक पहुंचाने की व्यवस्था करें जिन तक यह ठीक से नहीं पहुंचा है।

हमारे देश में आरक्षण की व्यवस्था को लागू करते समय भी इसी बात की जरूरत महसूस की गई थी कि आरक्षण व्यवस्था से समाज के वंचित और उपेक्षित वर्ग-समुदाय को समाज की मुख्यधारा में आने का मौका मिलेगा। ऐसा हुआ भी। पर इस तरह की आवाजें भी लगातार उठने लगी हैं कि एससी-एसटी वर्ग में कुछ लोगों को ज्यादा फायदा मिल रहा है और कुछ तक आरक्षण व्यवस्था का अंश तक नहीं पहुंच पा रहा है। इसको लेकर इन आरक्षित वर्गों में ही विद्रोह के भाव भी समय-समय पर देखने को मिलते रहे हैं। अच्छा होगा कि एससी-एसटी आरक्षण का उपवर्गीकरण करने के साथ ही उसमें क्रीमी लेयर का सिद्धांत लागू किया जाए। आरक्षित वर्गों में जो भी अपेक्षाकृत सक्षम और संपन्न हैं, उन्हें आरक्षण का लाभ दिया जाना सामाजिक न्याय की मूल भावना के खिलाफ तो है ही, वंचित-निर्धन लोगों के साथ किया जाने वाला अन्याय भी है। आरक्षण प्रदान करते समय यह देखा ही जाना चाहिए कि उसका लाभ पाने वाला पात्र है या नहीं? अब जब सुप्रीम कोर्ट ने एससी-एसटी समुदाय में आरक्षण के उपवर्गीकरण और क्रीमी लेयर की जरूरत जता दी है, तब फिर यह आवश्यक हो जाता है कि मोदी सरकार ओबीसी आरक्षण में उपवर्गीकरण की संभावना का पता लगाने के लिए गठित रोहिणी आयोग की रिपोर्ट पर अमल करने की दिशा में आगे बढ़े। कुल मिलाकर, ताजा फैसला न सिर्फ नीति-निर्माण के स्तर पर महत्वपूर्ण दखल है बल्कि आरक्षण जैसे मसले पर भविष्य के लिए दिशासूचक का भी काम कर सकता है।

पर्यावरण

पवन नागर

लेखक 'कृषि परिवर्तन' त्रैमासिक पत्रिका के संपादक हैं।

शुद्ध व पौष्टिक थाली की व्यवस्था जरूरी

आजकल आए दिन अचानक किसी-न-किसी के मरने की सूचनाओं में बढ़ोतरी देखने को मिल रही है और इन मरने वालों में बच्चों व युवाओं की संख्या अधिक होना काफी चिंताजनक है। खासकर हार्टअटैक और कैंसर से मौतों में अधिक बढ़ौतरी हुई है। एक अध्ययन के अनुसार देशभर में समग्र स्वास्थ्य में गिरावट की बहुत ही चिंताजनक तस्वीर सामने आई है, जो देश में कैंसर और अन्य गैर-संचारी रोगों के बढ़ते मामलों की ओर इशारा करती है। अध्ययन में बताया गया है कि हर तीन में से एक भारतीय प्री-डायबिटिक है, हर तीन में से दो प्री-हापरटेंसिव हैं और हर दस में से एक अवसाद से लड़ रहा है।

इस अध्ययन में यह भी बताया गया है कि कैंसर, मधुमेह, उच्च-रक्तचाप, हृदय-रोग एवं मानसिक स्वास्थ्य विकार जैसी विकट बीमारियाँ अब इतनी प्रचलित हैं कि वे 'गंभीर स्तर' तक पहुँच गई हैं। अनुमान है कि कैंसर के वार्षिक मामलों की संख्या 2025 तक 15,70000 हो जाएगी। 'दैनिक भास्कर' में छपी रिपोर्ट के अनुसार 3 साल में नर्मदापुरम में कैंसर के मरीज 700 प्रतिशत तक बढ़ गए हैं। आए दिन व्यक्ति किसी-न-किसी बीमारी से ग्रस्त हो रहा है और अब विभिन्न प्रकार की बीमारियों के साथ जीना उसकी मजबूरी हो गई है। हमारी आँखों के सामने कम उम्र के युवा व बच्चे असमय मृत्यु के शिकंजे में जकड़ते जा रहे हैं। आखिर क्यों हो रहा है, ऐसा?

छह माह पूर्व 40 एकड़ के एक किसान की माता जी की, जो कि बिल्कुल स्वस्थ थीं, अचानक हार्ट-अटैक से मृत्यु हो गई। यह किसान साल में तीन फसल लेता है- गेहूँ, धान और मूँग। फसलों के अधिकाधिक उत्पादन के लिए अधिकाधिक रासायनिक खादों और कीटनाशकों के प्रयोग से वह बिल्कुल नहीं हिचकता। इसी तरह 10 एकड़ के एक किसान के युवा बेटे की, जिसकी इसी साल शादी होना थी, मृत्यु भी अचानक हृदयाघात से हो गई। ध्यान देने वाली बात यह है कि इनके पिताजी सरकारी नौकरी में हैं। यह किसान भी साल में दो फसलें लेता है - गेहूँ और धान।

पहले किसान से, जिनके पास 40 एकड़ ज़मीन है, जब हमने पूछा कि आप अपने परिवार के लिए अनाज, दाल, चावल, सब्जी

इत्यादि भोजन की व्यवस्था कैसे करते हैं, तो उनका जवाब था कि हम तो सब बाज़ार से लाते हैं। दूसरा प्रश्न था कि आप जो तीन फसलें लेते हैं -गेहूँ, धान, और मूँग- इनमें से कौन-कौन सी फसलें अपने खाने के लिए उपयोग करते हैं? इनका जवाब सुनकर कोई भी आश्चर्यचकित हो जाए। जवाब था कि हम हमारे खेत के गेहूँ, चावल, और मूँग खाते ही नहीं हैं। सोचिए, एक सम्पन्न किसान अपने खेत की फसल का उपयोग अपने परिवार के लिए करता ही नहीं है, तो आप इस खेती को क्या नाम देंगे? आज किसान के पास सभी आधुनिक साधन उपलब्ध हैं, यदि कुछ नहीं है तो वह है शुद्ध और रसायन-मुक्त सब्जियाँ, गेहूँ, दाल, फल इत्यादि, जो उसके ही खेत में उत्पादित हो सकते हैं।

यह सिर्फ दो किसानों की बात नहीं है, ऐसे कई किसान हैं जिनके घर असमय मृत्यु दरवाज़ा खटखटा रही है। जब किसान खुद अपने खेत में उत्पादित हो सकने वाली रसायन-मुक्त चीज़ों का सेवन नहीं कर पा रहा है तो फिर आम नागरिक, जिनके पास खुद की ज़मीन नहीं है, उनको क्या उपलब्ध हो रहा होगा इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। दूसरे किसान, जिनके पास ज़मीन के साथ-साथ सरकारी नौकरी भी है और जो सालभर में दो फसलें लेते हैं, उनका भी हाल यही है। उनके पास भी अपने परिवार के लिए अपने खेत का उत्पादित भोजन नहीं है और ये भी पूरी तरह से बाज़ार पर आश्रित हैं।

देशभर में रासायनिक खेती करने वालों की लगभग यही स्थिति है। कहने को तो हर साल उत्पादन के रिकॉर्ड बन रहे हैं, परंतु किसानों के पास ही पौष्टिक और शुद्ध भोजन का टोटा पड़ा हुआ है। अब स्थिति यह है कि लगभग हर किसान के घर बीमारी पहुँच चुकी है और इन बीमारियों पर जो खर्च हो रहा है वह रासायनिक खेती के उत्पादन से ज़्यादा भारी पड़ने लगा है। यह तो सिर्फ किसान परिवारों की व्यथा है, उन नागरिकों का क्या हाल होगा जो पहले से ही बाज़ार के हवाले हैं?

जलवायु परिवर्तन के बढते संकट के समाधान के तौर पर भी ज़हरमुक्त खेती उपयुक्त है। यदि किसान ज़हरमुक्त खेती करेंगे तो न सिर्फ वे अपने लिए शुद्ध भोजन की व्यवस्था करेंगे, बल्कि अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और अन्य नागरिकों के लिए भी शुद्ध और पौष्टिक भोजन की व्यवस्था करने में सहभागी बनेंगे। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम का सटीक अनुमान लगाना मौसम विशेषज्ञों के लिए कठिन हो गया है। मौसम के इस परिवर्तन के कारण एकल फसल में सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि यदि बेमौसम बारिश, कम या अधिक वर्षा की वजह से हमारी एकल फसल प्रभावित होगी तो हमारे भोजन की व्यवस्था कौन करेगा?

किसानों को उनके खेत में नाना-नाना प्रकार की फसलें लगाने में क्या दिक्कत आ रही है? क्यों ये किसान अपने लिए विविध फसलें लगाने से कतरा रहे हैं? यदि वाकई में हम सबको बीमारियों, जलवायु परिवर्तन, वायु-प्रदूषण, जल-संकट, सूखा और अकाल जैसी विकट समस्याओं से बचना है या इनका डटकर सामना करना है तो हमारे पास एक ही विकल्प है कि हम प्रकृति के अनुकूल जीवनशैली अपनाएँ और ऐसा कोई कार्य न करें जिससे प्रकृति को इस सृष्टि का संतुलन बनाने के लिए कठोर कदम उठाना पड़े।

प्रकृति के प्रकोप से बचना है तो किसानों को ज़हरमुक्त खेती करना चाहिए, जिससे न केवल उन्हें शुद्ध भोजन मिलेगा, बल्कि वे जल एवं वायु-प्रदूषण को रोकने में भी योगदान देंगे। काम कोई ज़्यादा कठिन नहीं है, बस हर किसान और हर व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के तौर पर यह निश्चय करना है कि अपने परिवार के लिए शुद्ध व पौष्टिक थाली की व्यवस्था करे, भले ही इसमें सुविधा थोड़ी कम मिले। यदि आप चाहते हैं कि पहला सुख निरोगी काया मिले तो आपको ज़हरमुक्त खेती करना ही पड़ेगी। यही समाधान है, मानव जाति के लिए प्रकृति के प्रकोप से बचने का। (सप्रेस)

आखिर व्यर्थ के मुद्दों को इतनी हवा देने की क्या जरूरत ?

दृष्टिकोण

राजेंद्र बज

लेखक स्तंभकार हैं।

इस समय जाति को लेकर राजनीतिक घमासान जोरों पर है। वैसे तो मामला कुछ खास नहीं है, लेकिन अन्य मुद्दों के अभाव में इसे लेकर इधर वाले और उधर वाले दोनों ही पक्ष तलवारें भांज रहे हैं। यूं तो राजनीति के मैदान में राह चलते मुद्दे मिल जाया करते हैं। मुद्दों को ढूंढने की आवश्यकता नहीं होती। अब महंगाई और भ्रष्टाचार जैसे घिसे-पिटे मुद्दे को लेकर उतनी चर्चा नहीं होती , जितनी कि विरोधी की जुबान पकड़ने के चलते निकल कर आती है। मीडिया भी ताजगी भरी खबरों की खोज में रहता है। यह जरूरी नहीं कि किसी बात को लेकर मुद्दा बनाया जाए, बल्कि बिना बात की बात के भी मुद्दा बनाया जा सकता है।

ऐसे में राजनीतिक सक्रियता दर्शाने के लिए यह लाजिमी है कि कुछ न कुछ नए मुद्दे उछाल कर बवाल मचाया जाए। अब देखिए, उधर लोकसभा में अनुराग ने जो राग छेड़ा, उनके साथ उनके पक्ष वाले संगत करने लगे। उधर वाले जो मुद्दा उछाल रहे थे, एकाएक उनके मुखिया के सिर माथे मंडराने लगा। देखते ही देखते मामला गरमाने लगा। यह मामला तब तक चलेगा जब तक कि इससे बढ़कर दूसरा मुद्दा विरोधियों के हाथ नहीं आ जाता। ऐसा प्रतीत होता है कि हाल-फिलहाल तो शायद लंबे समय तक इस मुद्दे के सहारे ही विरोधियों को अपनी सक्रियता का परिचय देना होगा। इस मुद्दे को शांत करने के लिए इससे बड़ा मुद्दा दरकार होगा।

यह सिलसिला आजादी से लेकर अब तक निरंतर चला आ रहा है और ऐसा लगता है कि आने वाले दौर में भी चलता रहेगा। लोकतंत्र की राजनीति में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का जितना उपयोग राजनेता करते हैं, उतना आम नागरिक नहीं करता या यूं कहें कि कर ही नहीं सकता। जमाने को दिख रहा है कि यह गलत है, लेकिन जब तक गलत के विरुद्ध लामबंद नहीं हुआ जाए, तब तक गलत का प्रभावी प्रतिकार नहीं किया जा सकता। यही कारण है की ज्वलंत विषयों पर आम आदमी चुप्पी साध लेता है। लेकिन यह जो राजनीतिक खेमे होते हैं, इनके पास कम या ज्यादा लेकिन जनबल होता ही है। जिसके चलते दलीय हित ही इनकी प्राथमिकता में होता है।

अब इसे किसका दुर्भाग्य कहा जाए कि ये खेमे जो मुद्दे उठाते हैं, उससे आम आदमी की समस्याएं दूर नहीं होती। केवल और केवल इनके द्वारा उठाए गए मुद्दे उनके ही राजनीतिक स्वार्थ के वशीभूत हुआ करते हैं। कभी-कभी आश्चर्य होता है कि व्यर्थ के विवादों को इतना अधिक तूल देने की भी क्या जरूरत थी ? वैसे भी इस समय दशकों से चली आ रही गंभीर समस्याएं सर माथे पर है। क्या तो सत्तापक्ष और क्या प्रतिपक्ष, हर कोई व्यर्थ के विवाद खड़े कर अपने-अपने स्तर पर अपनी राजनीतिक शक्तियों को जाया कर रहा है। आए दिन बे-बात की बात का बवाल खड़ा करना, कहीं से कहीं तक जनमत की भावना का सम्मान नहीं है।

दरअसल राजनीति भी एक प्रकार से शह और मात का खेल बनकर रह गई है। अपने जनप्रतिनिधि होने के चलते स्वाभाविक राजनीतिक धर्म का निर्वहन करने की भावना कहीं से कहीं तक दिखाई नहीं देती। ताजा मामले में अब यदि अपना ही दांव उल्टा पड़ता दिखाई देने लगे, तो चुप्पी साध ली जाती या सवाल को नया मोड़ दे दिया जाता। अनावश्यक रूप से उसका व्यक्तिगत रूप से अपने आप को कटघरे में मानकर आक्रामक हो जाना, राजनीतिक अपरिपक्वता का ही परिचायक है। खैर, समय की धारा के प्रवाह में यह मुद्दा भी बह जाएगा। लेकिन यह सवाल तो अनुत्तरित ही रह जाएगा कि आखिर राजनीति के नाम पर व्यर्थ के प्रलाप का सिलसिला कब बंद होगा ?

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रीतम लखवाल

लेखक व्यंग्यकार हैं।

लेखन के जरिए समाज सुधार का गुणा-भाग

वह शायद रविवार का दिन था। मैं कुछ चिंतित मुख मुद्रा बनाए ऐसे बैठा, जैसे देश में कहीं बहुत गंभीर मसले को हल करने की जिम्मेदारी मुझे दे दी हो। अब मैं ठहरा अदना सा लेखक। नया बहुत कम लिख पाता हूं। वह इसलिए कि सुबह कोई विषय सोचता हूं तो शाम तक मूड बनते-बनते उसकी हवा निकल जाती है और फिर नए विषय की खोजबीन के लिए उधेड़बुन लगी रहती है। इसलिए मैं व्हाट्सएप ग्रुप में अपनी पुरानी रिपोतार्ज, खबर और कुछ हस्तियों के साथ फोटो आदि सरकाते रहता हूं। यह तो भला हो ग्रुप मेंबर्स का वे भी उन्हें बिना देखे और ओपन किए ही तुरंत बधाई लिख फारिग हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि स्थापित हैं तो नया ही भेजा होगा। खैर, मैं चिंतित अवस्था में था ही कि इतने में ही मेरा सुपुत्र पास में आकर बैठ गया। मैं अवचेतन में कुछ सोच ही रहा था कि मुझे ख्याल आया कि यार प्रभु, अपन के बाद अपनी साहित्य विरासत को आगे बढ़ाने वाला वारिस तो होना चाहिए। जिससे लोग कहने लगें कि फलां के बेटे ने भी साहित्य जगत में आखिर तीर मार ही लिया। पहले सोच रहा था कि बेटे, बेटी, पत्नी और साली के अलावा पड़ोसन के नाम से भी साहित्य का सर्जन कर लूं। कहने को तो होगा कि परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए मेरे पास इतने ऑप्शंस हैं। कोई न कोई तो स्थापित हो ही जाएगा और इस खाकसार को भी इस बहाने याद तो कर ही लिया जाएगा। हां,याद आया कि बेटा मेरे पास बैठा हुआ था। सोचा उससे ही पूछ लूं कि वह मेरी लेखकीय (यहां टीप कर सर्जित साहित्य की बात नहीं कर रहा हूं।) परंपरा को आगे बढ़ाएगा कि नहीं? देखा तो बेटा अपने मोबाइल पर कुछ वेबसाइट पर खोजने की जुगत भिड़ा रहा था। शायद कोई नया सब्जेक्ट सर्च कर रहा होगा, लेकिन मेरा अनुमान संसद की कार्रवाई की तरह तत्क्षण ही स्थगित हो गया। वैसे आजकल अनुमान और अरमान दोनों ही धराशायी हो रहे हैं। मैंने बेटे की तरफ एक सवाल उछाल दिया। इस उम्मीद से कि लेखन से व्यक्ति के विचारों को बदला जा सकता है। मानसिकता में भी बदलाव संभव है। जब व्यक्ति बदलेगा तो समाज का सुधार करेगा यानी समाज सुधारकों की फौज तैयार होगी। इस फौज से क्रांति आ जाएगी। मैं अब फिर फ्लैशबैक में था- 'शायद तब के मूर्धन्य नाम साहित्यकार जिन पर पीएचडी आदि करना डॉक्टर होने की गारंटी है, ने भी समाज सुधार को ही मुख्य हथियार बनाया होगा, लेकिन हालात बदलते ही वह हथियार केवल साहित्य की अलमीरा में सजा रहता है और उसका कवरपेज बाहर झांकते रहता है।' मैं उस स्थिति से बाहर आया और बेटे से पूछा- क्या बनना चाहते हो? वह मेरी ओर देखता भर है, लेकिन बोलता कुछ नहीं। मैंने सवाल को थोड़ा परिमार्जित किया- बेटा जैसे डॉक्टर का बेटा डॉक्टर, टीचर का बेटा टीचर और पटवारी का बेटा भी वही बनता है और कलेक्टर...। तो तुमने भी कुछ सोचा होगा? वह इस बार खामोश नहीं रहा। वह बोला- पापा मुझे तो इंजीनियरिंग करनी है और मैं कॉलेज सर्च कर रहा हूं। मैंने कहा-इसके लिए कॉलेज सर्च करने की जरूरत क्या है? बस पंक्चर की दुकान ही काफी है। कुछ ही दिनों में कुशल साइकल इंजीनियर तो बना ही देगी। वह बोला-आप भी न पापा क्या आयें-बायें बोलते रहते हो। डिग्री चाहिए डिग्री...।

वह तो ठीक है मैं बोला- इसके अलावा भी तो कुछ सोचा होगा न कि समाज को क्या देकर जाओगे। कुछ रचनात्मक कर जाओ। वह बोला- आपने इतना समय इसमें लगा दिया समाज को क्या मिला? इंसान तो पहले भी सोशल था अब और ज्यादा सोशल हो गया है। वह सोशल मीडिया के माध्यम से सब हासिल कर रहा है। अब मेरा दर्शन अब उस पुल की तरह धरातल पर था, जो ईमानदारी से की गई चोरी के कारण नदी में समा जाता है और फिर दिनभर ब्रेकिंग बन कर फ्लैश होता रहता है और रात को किसी रेस्तरां में ठहाकों में बदल जाता है। मैं सोचने लगा कि क्यों न अब इनके नाम से ही...। अब मैंने चैनल बदल लिया और कुछ रचने के लिए नए विषय के लिए सिर खपाने लगा।

देखा पढ़ा

ब्रजेश कानूनगो

लेखक स्तंभकार हैं।

धरती पर बिखरे इंद्रधनुष

सतरंगी इंद्रधनुष केवल आकाश में ही अपनी छटा नहीं बिखेरते। धरती पर भी ऐसे कई स्थान हैं जहां रंगों का मेला लगा है। दुनिया का वह ठंडा प्रदेश हो या उबलता भूभाग, इंद्रधनुष का सौंदर्य मन मोह लेता है। ऐसे ही दो खूबसूरत स्थलों की चर्चा आज यहां करते हैं।

रेनबो माउंटेन

जंपिंग प्लेसेस ट्रेवल व्लाग के युवा दंपति के साथ यूट्यूब पर हमने पेरू गणराज्य के विनिकुंका पर्वत की मानस ट्रैकिंग करते हुए खूबसूरत इंद्रधुनुषी चादर को ओढ़े जिस पहाड़ का खूबसूरत नजारा देखा उसे स्थानीय भाषा मे मोंटाना डी सिएट कलर्स कहते हैं। अंग्रेजी में पर्यटक इसे रेनबो माउंटेन के रूप में जानते हैं। हिंदी में इसे इंद्रधनुषी पर्वत कहा जा सकता है।

कुदरत का यह करिश्मा दक्षिण अमेरिका के पश्चिम भूभाग में स्थित पेरू गणराज्य की नैसर्गिक धरोहर है। सामान्यतः पेरू के इस पर्वत के तल पर तापमान 10 डिग्री सेल्सियस रहता है और हम जब इसके शिखर तक पहुंचते हैं तो वहां का तापमान शून्य से कम होकर माइनस पांच से लेकर माइनस दस तक गिर जाता है। धरती पर दूर तक फैले इस अलौकिक सौंदर्य को देखने के लिए पर्यटक को लगभग 2 घंटे में 400 मीटर की खड़ी चढ़ाई या ट्रैकिंग करनी पड़ती है। साल के 12 महीने में से 8 महीने यह रंगीन छटा पर्यटकों का इंतजार करती रहती है। इसी दौरान दुनिया भर के लोग इसका आनंद उठाते रहते हैं।

रेनबो पर्वत हमेशा से ऐसे नहीं थे। बहुत पहले ये पर्वत सामान्य पर्वत ही थे जैसे आमतौर पर भूरे,काले दिखाई देते हैं लेकिन धीरे-धीरे इनकी ऊपरी सतह का क्षरण हुआ,मिट्टी हटी तो यह सतरंगी छटा ज्यामितीय रूप से रंगीन पट्टियों की शक्ल में उभर आई। समुद्र तल से लगभग 5200 मीटर ऊपर पहाड़ों पर बिखरा यह सौंदर्य अद्भुत है। इसे देखना अलौकिक अनुभव होता है। निश्चित रूप से इंद्रधनुषीय यह आभा विभिन्न खनिजों की रंगीन सतहों के कारण दिखाई देती है। यूट्यूब पर जंपिंग प्लेसेस के युवा दंपत्ति द्वारा साझा इस खूबसूरत वीडियो में ठंडे क्षेत्र के रेनबो माउंटेन की इंद्रधनुषी छटा ने हमारा मन मोह लिया है।

डेलोल इथोपिया

ऐसे ही एक दूसरे रंगबिरंगे नजारे को हमने दुनिया के सबसे गर्म क्षेत्र की धरती पर देखा और रोमांचित हुए। यह इंद्रधनुष भी आकाश में नहीं जमीन पर ही बिखरा पड़ा है। दुनिया में सबसे ज्यादा गर्म रहने वाले दस स्थानों में से एक है इथोपिया का डेलोल इलाका। इस भीषण गर्म क्षेत्र में रहना, ठहरना या घूमना बहुत मुश्किल होता है। बारहों महीने बहुत गर्मी पड़ती है। औसत तापमान 45 डिग्री के आसपास बना रहता है, लोग बताते हैं कि कभी कभी अधिकतम 59 डिग्री सेल्सियस तक भी यहां का तापमान पहुंच जाता है।

पूर्वी अफ्रीका भूभाग के हॉर्न क्षेत्र में इथोपिया एक लैंड लॉक देश है जो सोमालिया, केन्या,सूडान जैसे अन्य देशों से घिरा हुआ है। यह बहुत पिछड़ा देश है किंतु अपने खनिज भंडारों में बहुत समृद्ध है। आर्थिक रूप से बहुत कमजोर है। यहां काफी गरीबी है। डेलोल यात्रा के लिए पर्यटक को गाइड के अलावा एक गनमैन को साथ ले जाना भी अनिवार्य होता है। दरअसल इथोपिया में इसी तरह सुरक्षित पर्यटन करना आवश्यक हो जाता है।

यद्यपि डेलोल एक बेहद गर्म स्थानो में से एक है लेकिन यह निर्जन नहीं है। कुछ जनजातियां यहां अभी भी निवास करती हैं। इस क्षेत्र की सुंदर छटा को देखने के लिए पर्यटक टूर एजेंसी के साथ ही यात्रा प्रबंधन कर पाते हैं। दरअसल यह समुद्र के सूख जाने के बाद खाली हुआ प्रदेश है, जहां नमक के मैदान हैं। आयरन, जिंक तथा अन्य खनिजों,अयस्कों युक्त मिट्टी तथा नमक के रण का अनोखा सौंदर्य तब और बढ़ जाता है जब उसमे पीले सल्फर के स्रोत आ मिलते हैं। गर्म उबलते पानी के नीले सोते दृश्य में घुलमिल जाते हैं। नमक के मैदाने के बीच सल्फ्यूरिक स्रोत से सल्फर की खुशबू आती रहती है। गंधक का पीला रंग फैलता हुआ नीला, पीला, हरा, लाल, केसरिया में बदलता, घुलता मिलता जाता है। यह इंद्रधनुष हम नमक के मैदान के साथ-साथ चलते हुए अनुभव करते हैं। आगे जाकर सल्फर का पूरा स्रोत सुंदरता बिखेरता फैल जाता है। यहां एक झील भी है छोटी सी जिसमें हल्का एसिडिक पानी है। दरअसल यह एक ऐसा सतरंगी दृश्य होता है जिसे देख हम चकित हो जाते हैं।

डेलोल की यह रोमांचक मानस यात्रा हमने बहुत प्रिय ब्लॉगर नोमेडिक इंडियन के दीपांशु और नोमेडिक शुभम के शुभम के साथ की थी। हाल ही में हमने फिर से इस स्थान की सैर और उसकी स्मृति को राजस्थान, गुजरात बॉर्डर के निवासी व्लॉगर बंसी विश्नोई के विडियोज के साथ ताजा की।

धरती पर बिखरे इंद्रधनुष के खूबसूरत नजारे दुनिया में और भी कई रूपों में मिल जाते हैं, कहीं फूलों के रंग हैं तो कहीं पानी के। कहीं मिट्टी, चट्टान, वनस्पति और खनिजों के रंग बिखरकर मन मोह रहे हैं। यही इस धरती का, प्रकृति का मनुष्य जाति को बहुमूल्य उपहार है, इसे सहेजने का दायित्व हमारा ही है। तरीका चाहे जो हो किताबों में, वीडियो में या फिर अपनी स्मृतियों में इसे हमेशा के लिए संग्रहित कर लिया जाना चाहिए।

सामयिक

डॉ. गरिमा दुबे

लेखिका स्तंभकार हैं।

नेशन फर्स्ट, भारत प्रथम : सतर्कता सावधानी हर कहीं

क्या भारत गृह युद्ध के मुहाने पर है ? पूरा विश्व हिंसा के ज्वार में है । रक्त क्रांति, लाल क्रांति के पैरोकारों की ताकत बढ़ रही है । दुनिया के नक्शे पर इन दिनों होने वाले हालात पर नज़र डालिए, जियो पॉलिटिक्स की यदि थोड़ी भी जानकारी होगी तो यह पता लग जायेगा कि भारत के गृह युद्ध की बात मैं क्यों कह रही हूं । दुर्भाग्य से इस समय जब एक बेहद मजबूत सरकार की आवश्यकता थी तब हमने अपने हाथ काट लिए हैं ।

अब यह सोचना कि भारत में होने वाला एक छोटा सा परिवर्तन क्या संसार में परिवर्तन की राह बना, या संसार में होने वाले परिवर्तन और उन शक्तियों ने भारत को एक धक्का दिया ।

भारत की हल्की सी अस्थिरता ने विश्व में हलचल पैदा की या वैश्विक तूफान ने भारत में हलचल मचाई। यह एक विश्लेषण का विषय है ।

हाल ही में संपन्न हुए कुछ देशों के चुनाव, जिनमें सबसे पहले भारत, ब्रिटेन, फ्रांस और ईरान का नाम लेना होगा । एक जैसा पैटर्न है । भारत में दक्षिणपंथी सरकार को मिला धक्का, ब्रिटेन में सुनक को हार, हालांकि नए प्रधानमंत्री कट्टर वामपंथियों को हाशिए पर धकेलने के लिए जाने जाते हैं, किंतु फिर भी वे दक्षिणपंथी नहीं हैं यह एक तथ्य है । फ्रांस में त्रिशंकु सरकार और वाम दलों का उभार,

ईरान में इससे उलट कट्टरपंथ की हार जहां हिज़ाब विरोध इस परिवर्तन का कारण बना । बहुत बहुत तेज गति से परिवर्तन हुए हैं और एक साथ हुए हैं, अभी अमेरिका का नतीजा आना बाकी है, वैसे अमेरिका अपने हितों से कभी समझौता नहीं करता, वाम हो दक्षिण हो कोई विचार नेशन फर्स्ट अमेरिका फर्स्ट को इस नीति में अंकल सैम कोई समझौता नहीं करते, इसलिए यह कहना कि अमेरिका में वाम के आजाने से कोई वामपंथ को सहारा मिलेगा या दक्षिण पंथ के आ जाने से दक्षिण पंथ को मदद मिलेगी यह सोचना मूर्खता होगी । अमेरिका अपने हितों के लिए सबको अपनी जूती की नोक पर रखना जानता है, लगभग वही हाल रशिया का भी है, ये दो ध्रुव एक जैसे हैं, फिर भी रशिया की भारत से प्रतिबद्धता असंदिग्ध है ।

एक तरफ इजराइल है, फिलिस्तीन है,
एक तरफ रशिया है, यूक्रेन है,
एक तरफ फ्रांस है, कट्टरवाद है
एक तरफ भारत है, पाकिस्तान, चीन,बांग्लादेश है, और घर के भीतर बैठी विभाजनकारी शक्तियां हैं,

युद्ध के पैटर्न देखिए, और भारत की तरफ देखिए, बाकी देशों का युद्ध और भारत के युद्ध में ज़मीन आसमान का फर्क है, घोषित रूप से बिना किसी युद्ध का हिस्सा हुए, सदा अहिंसा शांति का पक्षधर होने के बावजूद भारत एक अघोषित युद्ध सदा से लड़ता रहा है ।

यूरोप का खूनी इतिहास,
इस्लाम का हिंसक विस्तारवाद,
विश्व युद्ध लड़ने वाले देशों का दमनकारी, बाज़ार को वश में करने वाला शक्ति प्रदर्शन ईसाइयों का दया की आड़ में लड़ा जाने वाला धर्मान्तरण युद्ध, इन सबमें भारत कहां है, क्या इन सबमें से कोई युद्ध भारत ने लड़ा या किसी युद्ध का प्रारंभ भारत से हुआ ऐसा कोई उदाहरण हो तो कृपया बताएं ।

भारत युद्धरत नहीं, युद्ध पीड़ित राष्ट्र है, उसके घाव ऐसे हैं जो या तो दिखाई नहीं देते, या दुनिया उसे देखना नहीं चाहती, या उसे अपने घाव दिखा दिखा कर विक्टिम कार्ड खेलना कभी आया ही नहीं, विश्व की सबसे अधिक पीड़ित संस्कृति, अपनी पीड़ा को प्रदर्शित नहीं कर पाई, उसे तो किसी से लड़ना ही नहीं था, वह तो चुपचाप बैठकर अपने उत्कर्ष के रास्ते तलाशती रही है, खैर इस विषय पर फिर कभी...

भारत युद्ध लड़ने वाला राष्ट्र नहीं रहा, उसे विवश किया जाता रहा है, अनमने ढंग से वह किसी युद्ध के लिए तैयार होता है, जितने भी युद्ध भारत को लड़ने पड़े वह अपने अस्तित्व को बचाने के लिए, उस पर भी विरोधी के अस्तित्व को पूर्ण समाप्त करने की उसकी कोई परंपरा नहीं रही ।

सह अस्तित्व का सबसे बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करने वाला राष्ट्र अपनी स्वयं की धार्मिक सांस्कृतिक पहचान खोने के खतरनाक मुहाने पर खड़ा है, और उसकी इस पहचान पर घर के बाहर से कम घर के भीतर प्रहार अधिक हो रहे हैं, गोया जिस डाल पर बैठे हैं हर कोई उस डाल को काटने पर आमादा है, अजीब भ्रमित देश है, जाने क्या पाने की चाह में खुद से दुश्मनी निभा रहे हैं ।

हां हमारे शत्रुओं को हमारी कमज़ोरी पता है, उन्हें पता है जिस अनेकता में एकता को हमने अपनी ताकत बना लिया था, वही अब हमारी सबसे बड़ी कमज़ोरी बन गई है । अंग्रेज़ तो केवल हिंदू मुस्लिम में विभाजित करके गए थे हमें, उसके बाद जो हम विभाजित हुए हैं उसकी तो उन्होंने भी कल्पना नहीं की होगी ।

धर्म, पंथ, जाति, क्षेत्र, रंग, पहनावा, खान पान के आधार पर विभाजित करने की कोशिशें एक बार फिर सिर उठाने लगी हैं ।

सतर्क रहें, सावधान रहें, बहुत भ्रम फैलाए जायेंगें, ना ना प्रकार से भड़काया जायेगा, एक जरा सी कमज़ोरी क्या आई देश में कि बाहरी हमलावरों और भीतरी हमलावरों के हौसले कैसे बुलंद हुए जाते हैं, एक महीने में पांचवा हमला, घर के भीतर भी अनेक बातें होंगी, कौन शत्रु हैं कौन मित्र पहचानिए, किसके निजी स्वार्थ राष्ट्र हित से बड़े हैं, पहचानिए, वर्तमान दुनिया में होने वाली कोई घटना किसी एक देश की नहीं होती उसके वैश्विक परिणाम होते हैं । तेजी से घटते घटनाक्रम में भारत की भूमिका क्या होगी यह महत्वपूर्ण है ।

क्या भारत में कभी ऐसा समय आएगा कि चाहे जो हो राष्ट्र हित, संस्कृति हित, अस्तित्व गत प्रश्न बाकी सब प्रश्नों से ऊपर हों।

अमेरिका की तरह सत्ता में कोई सा पंथ रहे, अंतरराष्ट्रीय नीति में कोई बदलाव नहीं, नेशन फर्स्ट, भारत प्रथम क्या हमारी नीति नहीं होनी चाहिए, किंतु परंतु, यह वह से परे, भारत भारतीयता और उसके हित हम सबके साझे हित नहीं हैं क्या ।

आज जन्म-दिवस

ताहिर अली

(लेखक सेवानिवृत्त संयुक्त संचालक हैं)

सादगी, प्रेम और सरलता की प्रतिमूर्ति : राजेन्द्र शुक्ल

राजेन्द्र शुक्ल... मध्यप्रदेश के राजनीतिक क्षितिज में दैदीप्यमान वह प्रकाशपुंज हैं जो उज्जवल भविष्य, चहूँओर विकास को प्रदर्शित करता है। उनका नाम, विकास का भविष्योन्मुखी सोच का परिचायक है। उनकी दूरदर्शी सोच और उस सोच को धरातल में लाने की दृढ़ इच्छाशक्ति और जुझारू व्यक्तित्व उन्हें विशेष बनाता है। जन-जन के विकास के लिए बिना-रुके, बिना-थके सतत प्रयासरत शुक्ल की विनम्रता उनके व्यक्तित्व को असाधारण बनाती है। उन्हें विनम्रता का पर्याय कहना किसी भी तरह की अतिशयोक्ति नहीं होगी।

निःस्वार्थ सेवा, अथक परिश्रम, गहन समर्पण, अटूट निष्ठा, जरूरतमंदों की सहायता के लिए सदा तत्परता और लक्ष्य की ओर निरंतर यात्रा ने उन्हें भीड़ में अलग पहचान दिलाई है। वे नवोन्मेषी विचारक हैं। उनकी अंतरात्मा में विचारों की निरंतरता हमेशा गतिशील रहती है। उनके नवाचार की ऊष्मा हर पल नए और विशिष्ट विचारों का जन्म देती रहती है। चुनौतियों और लक्ष्यों से लड़ने की दृढ़ शक्ति उनमें निहित है। सौंपे गए दायित्वों को कुशलता से निभाने की क्षमता का आकलन कर विरोधी भी उनकी प्रशंसा किए बिना नहीं रहते हैं। कैसी भी बाधाएँ समस्याएँ आ जाएं, बिना समय व्यर्थ किए, बिना विचलित हुए वे सदैव समाधान के लिए प्रयास करते हैं। उनका मानना है कि 'अगर आप समाधान का हिस्सा नहीं है, तो आप खुद एक समस्या हैं।'

वे मानते हैं कि 'श्रमेण सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः' अर्थात् श्रम से ही कार्य सिद्ध होते हैं, मात्र इच्छाओं से नहीं। लक्ष्य प्राप्ति के लिए सतत प्रयास करना सोच से भी महत्वपूर्ण है। सतत प्रयास से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ रश्मिरथी का यह उद्धरण प्रासंगिक है-

'खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पांव
उखड़, मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है...'।

राजेन्द्र शुक्ल जी का जीवन संघर्ष और सेवा का जीवंत उदाहरण है, जो हमें प्रेरणा देता है कि कैसे कठिनाईयों और संघर्षों के बीच भी एक व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है और समाज के लिए आदर्श बन सकता है। राजेन्द्र शुक्ल के व्यक्तित्व की उदारता, सहृदयता, संवेदनशीलता और सज्जनता के अद्भुत संयोजन में ऐसा व्यक्तित्व निर्मित हुआ है, जिसने सरल, सहज, उदार, स्नेही व्यक्तित्व की नई इबारत लिखी है। विशाल व्यक्तित्व के धनी का सशक्त पहलू व्यापक विचारधारा है। उनकी चिंतन क्षमता ने उनके व्यक्तित्व में व्यावहारिकता और आध्यात्मिकता का अनूठा संयोजन किया है। उनका यहीं सेवा-भाव जरूरतमंद की मदद करने में दिखता है।

शुक्ल में सेवा-संकल्प का समर्पित भाव, चुनौतियों की जिद और जूनून के साथ सामना करने का जज्बा उनके व्यक्तित्व के ऐसे पहलू हैं, जिन्होंने राजनीति को सेवा नीति में बदल दिया है। एक योगी की तरह हर आम-खास की बात, समस्या सुनना, मनन करना और जरूरतमंदों की सेवाभाव से मदद करना उनकी प्राथमिकता में रहता है। उनका यह ऐसा गुण है, जिसमें आम 'जन' के 'मन' से उनका एक गहरा और आत्मीयता पूर्ण रिश्ता बन जाता है। राजेन्द्र शुक्ल को कभी अपनी छवि निर्माण के लिए प्रयास नहीं करने पड़े। शुक्ल के व्यक्तित्व का प्रभावी पहलू उनकी विशिष्ट संवाद क्षमता है। वे सीधे और सहज भाव से श्रोताओं के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित कर उनकी समस्याओं का निदान करते हैं। वे दिखते साधारण है लेकिन उनका व्यक्तित्व असाधारण रूप से विशाल और प्रतिभा संपन्न हैं। मानवीय संवेदनाओं, अनुभूतियों से उदार गुणों से भरा दिल है जो हर पल पीड़ित मानवता की सेवा के लिए धड़कता है। वे कार्यों पर जितनी चौकस निगाह रखते हैं, उतनी उनको चिंता है कि दरवाजे पर आए गंभीर रोग से पीड़ित और हर दुखियारे की मदद कर उसका

दुःख-दर्द दूर किया जाए।

सहजता, सरलता, सौम्यता, शुचिता के साथ ही तत्परता और त्वरित गति से जन-समस्याओं का निराकरण; ये वे गुण होते हैं जो राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति को एक ऊँचे मुकाम तक पहुँचाते हैं। विन्ध्य की धरती पर जन्में राजेन्द्र शुक्ल के जीवन और उनके व्यक्तित्व-कृतित्व में ऐसे ही गुणों का समावेश है, जो सार्वजनिक जीवन में और राजनीति में काम करने की विशेषताएँ होती है, राजनीति उनके लिए सेवा का भाव रही है।

शुक्ल ने पिता समाजसेवी स्व. भैयालाल शुक्ल के गुणों और संस्कारों का अनुसरण करते हुए स्वयं को ढाला। धीर-गंभीर ऋषि-मुनि मानव सेवा के लक्ष्य में एक तपस्वी की तरह लीन रहना उनका लक्ष्य है। उनकी सेवा भावना की तपस्या को कभी किसी पद का लालच भंग करने का साहसी ही नहीं जुटा पाया है। मानव-सेवा के लक्ष्य को शिरोधार्य कर अनवरत प्रयासरत हैं।

श्री राजेंद्र शुक्ल का जन्म और प्रारंभिक शिक्षा रीवा, मध्यप्रदेश में हुई। रीवा में 3 अगस्त 1964 को जन्में राजेन्द्र शुक्ल ने युवा अवस्था में ही राजनीति के प्रति अपनी रुचि बता दी थी, जब वे वर्ष 1986 में रीवा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए। शुक्ल ने वर्ष 1998 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सदस्यता ग्रहण की और प्रदेश कार्यसमिति सदस्य बनाए गए। व्यवसाय कृषि, तैराकी के शौकीन पहली बार वर्ष 2003 में विधानसभा के लिए चुने गए और राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) आवास एवं पर्यावरण रहे। विवादों से दूर रहकर बिना शोरगुल के काम करते रहने की नीति पर वे चले। शुक्ल को तीन कार्यकाल में मंत्रिमंडल में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिली। नेतृत्व के प्रति निष्ठा और राज्य सरकार के लक्ष्यों और कार्यक्रमों को पूरा करने की प्रतिबद्धता शुक्ल की विशेषता है।

रात-दिन विन्ध्य के विकास का सपना देखने वाले राजेन्द्र शुक्ल ने अपनी जन्म-भूमि विन्ध्य के विकास के प्रति अपने दायित्व को बखूबी निभाया। अपने क्षेत्र के विकास के लिए उनके ड्रीम प्रोजेक्ट्स मुकुन्दपुर व्हाईट टाइगर सफारी, चाकघाट से इलाहाबाद और हनुमना से बनारस फोर-लेन का निर्माण, हवाई पट्टी अथवा गुढ़ में विश्व का सबसे बड़े 750 मेगावाट सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना हो। शुक्ल ने रीवा के चौतरफा विकास में विशेष रुचि ली है। अपनी तमाम व्यस्तता के बाद भी शुक्ल लक्ष्मण बाग गौ-शाला में जाकर गायों की सेवा कर अपने पिता स्व. भैयालाल शुक्ल को सच्ची श्रद्धाजंलि अर्पित करते हैं।

उनके नेतृत्व और प्रयासों से रीवा और विन्ध्य क्षेत्र को नई पहचान मिली है और वे निरंतर अपने क्षेत्र के विकास के लिए कार्यरत हैं। नवकरणीय ऊर्जा मंत्री रहते हुए, उन्होंने रीवा में एशिया के सबसे बड़े सोलर प्लांट की स्थापना की और इसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकार्पित किया। रीवा में एयरपोर्ट सुविधा के लिए उनके प्रयास फलीभूत हुए और विंध्य की देश के अन्य हिस्सों से कनेक्टिविटी बेहतर हुई है। वे संभागीय मुख्यालय को महानगर बनाने की दिशा में भी सक्रिय हैं। उनके मंत्रिमंडल कार्यकालों के दौरान, वाणसागर के पानी से रीवा और विंध्य क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा में सतत वृद्धि हुई है। रीवा में तालाबों और जल संरचनाओं का सौंदर्यीकरण और पुनरुद्धार हुआ है। उन्होंने सड़क, पुल, रिंग रोड, मठ, मंदिर, तीर्थ स्थलों का जीर्णोद्धार और खाली पड़ी एवं अनुपयोगी जमीनों में पार्क और बागों का निर्माण करवाया है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी विशेष अभिरुचि रही है। जगह-जगह वृक्षारोपण और ईको-पार्क, नगर वन तथा एपीएस वन का निर्माण तथा बीहर नदी में रिवर फ्रंट का निर्माण भी उनके प्रयासों का परिणाम है। शुक्ल के प्रयासों से संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। माखनलाल विश्वविद्यालय के रीवा परिसर की स्वीकृति, भवन निर्माण एवं संचालन के कार्य को मूर्तरूप देने का कार्य किया। राजेंद्र शुक्ल गौ-सेवा के कार्यों के लिए सदैव प्रयासरत रहे हैं। बसामन मामा गौ-अभयारण्य गायों की देखभाल और संरक्षण के उत्कृष्ट प्रयासों का मूर्त मॉडल है।

शुक्ल स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता के महत्व को जानते हैं और सदैव इस दिशा में प्रयास करते रहे हैं। शुक्ल के नेतृत्व में स्वच्छ रीवा-स्वस्थ रीवा मिशन के तहत नगर पालिक निगम रीवा में करीब 20 से अधिक सुलभ शौचालय का निर्माण कराया गया है। स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए उन्होंने ज़िला चिकित्सालय का उन्नयन, सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल का निर्माण और चिकित्सकों की नियुक्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किए हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था को मज़बूत करने के लिए वे सतत प्रयास कर रहे हैं। अंत में राजेन्द्र शुक्ल की सोच और संकल्प को रेखांकित करती हुई दो पंक्तियाँ -

भीड़ में भीड़ बनकर रहे तो क्या रहे
भीड़ में अपनी निजी पहचान होनी चाहिए।

स्वस्थ, स्वास्थ्य सेवाएं प्रदेश के विकास का मेरुदंड होती हैं: कलेक्टर

● फ्लिप बुक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए टूल बुक का काम करेगी

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने कहा कि उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवाएं किसी भी राज्य के विकास का मुख्य आधार होती है। आमजन को जितनी अच्छे स्तर पर स्वास्थ्य सेवाएं मिलेंगी, प्रदेश के विकास का स्तर उसके आगे होता है। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी स्वास्थ्य विभाग की सहयोगी संस्था अंतरा फाउंडेशन के समन्वय से फील्ड में कार्यरत स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन के लिए निर्मित फ्लिप बुक के अनावरण के अवसर पर स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। शुक्रवार को प्रधानमंत्री ऑफ एक्सीलेंस महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित इस अनावरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कलेक्टर का सीएमएचओ उईके द्वारा पौधे से स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथियों की उपस्थिति में मां सरस्वती को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ।

फ्लिप बुक बनाम टूल बुक- कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने कहा कि राज्य शासन की स्वास्थ्य योजनाओं को जन-जन और गांव-गांव तक पहुंचाने में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े कार्यकर्ताओं और संस्थाओं को उनके योगदान के लिए धन्यवाद देता हूं। जिनके प्रयासों से समर्पण एवं मानव सेवा के प्रति प्रेम के कारण योजनाओं का लाभ हितग्राहियों को मिल पाता है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी बधाई के पात्र है, जिन्होंने योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए समय-सीमा में कार्यक्रम बनाकर उन्हें मूर्त रूप प्रदान किया । यह पुस्तक टूल बुक के रूप में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिए सहयोगी होगी। स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के कौशल एवं ज्ञान वर्धन के लिए प्रकाशित फ्लिप बुक के संबंध में फाउंडेशन के जिला हेड सोनू राय ने बताया कि अंतरा फाउंडेशन एक गैर सरकारी संगठन है, जो राज्य शासन के लिए स्वास्थ्य के क्षेत्र में सहयोगी संस्था के रूप में कार्य कर रहा है। विशेष रूप से मां और शिशु के स्वास्थ्य जीवन की सामान्य शुरुआत के उद्देश्य के साथ मातृ एवं शिशु स्वस्थ्य परिणामों को सुधारने की दिशा में प्रदेश के 9 जिलों में यह कार्यरत है।

फ्लिप बुक बनाम गाईड बुक- सीएमएचओ ने कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता इस फ्लिप बुक को अपने गाइड बुक के रूप के साथ रखें। इसमें 30 थीम्स सरल तरीके से परिभाषित की गई है। जिनमें 20 व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं के लिए समर्पित है। इनमें 13 थीम्स विशेष रूप से मातृ और शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण पर केन्द्रित है। यह फ्लिप बुक सीखन और सिखाने वाले उपकरण के रूप में डिजाईन की गई है। जिसमें सीएचओ को अपने ज्ञान, कौशल के साथ आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं एएनएम के ज्ञान और क्षमता को बढ़ाने में सक्षम बनाता है। यह सामूहिक क्षमता वृद्धि एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं के प्रदाय के लिए अति महत्वपूर्ण साबित होगा।

इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.रविकांत उईके, सिविल सर्जन डॉ.अशोक बारंगा, सोनू राय, उप संचालक स्वास्थ्य सेवाएं भोपाल उपस्थित थे।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा-श्रमिक भी ले सकेंगे नि:शुल्क राशन का लाभ

नवीन हितग्राहियों के दस्तावेजों का करें तुरंत सत्यापन: कलेक्टर

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने जिले के जनपद पंचायत तथा नगरीय निकाय को निर्देशित किया है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत नि:शुल्क खाद्यान्न प्राप्त करने वाले असंगठित अप्रवासी श्रमिकों के दस्तावेजों का सत्यापन शीघ्र किया जाए, जिससे उन्हें एम राशन मित्र पोर्टल पर जोड़ा जा सके। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के अंतर्गत 28वीं श्रेणी के रूप में असंगठित एवं अप्रवासी श्रमिक वर्ग को जोड़ा गया है।

राशन मित्र पोर्टल पर पंजीयन

राशन मित्र पोर्टल पर पात्रता पर्ची के लिए आवेदन के साथ निम्न दस्तावेज होना आवश्यक है। समग्र सामाजिक सुरक्षा मिशन पोर्टल के अंतर्गत पंजीकृत समग्र परिवार आईडी एवं समस्त सदस्यों की आईडी होना आवश्यक है। आवेदक एवं परिवार के सभी सदस्यों के आधार कार्ड की छाया प्रति, मुख्यमंत्री जन कल्याण संबल योजना के अंतर्गत श्रम विभाग में पंजीकृत श्रमिक का ई-कार्ड, केन्द्र सरकार के ई-श्रम पोर्टल पर दर्ज श्रमिकों का यूएएन नंबर अथवा ई-कार्ड की प्रति तथा परिवार के मुखिया या किसी एक सदस्य का मोबाइल नंबर होना आवश्यक है। असंगठित एवं प्रवासी श्रेणी के अंतर्गत ऐसे श्रमिक जो श्रम विभाग के अंतर्गत मुख्यमंत्री जन कल्याण संबल योजना एवं केन्द्र सरकार की ई-श्रम में पंजीकृत होना चाहिए। संबल योजना एवं ई-श्रम पोर्टल पर पंजीकृत ऐसे प्रवासी श्रमिक जो ना तो शासकीय सेवा में हो और ना ही आयकरदाता की श्रेणी में होना चाहिए। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत निशुल्क राशन प्राप्त करने के लिए चिन्हित 27 श्रेणियों को राशन वितरित किया जा रहा है। आदेशानुसार अब असंगठित एवं अप्रवासी श्रमिक वर्ग को सूची में 28 वीं श्रेणी के रूप में जोड़ा गया है।

कलेक्टर ने अधिकारियों से कहा कि निशुल्क खाद्यान्न प्राप्त करने के लिए संबल एवं ई-श्रमिक योजना में पंजीकृत श्रमिकों से पात्रता पर्ची के लिए आवश्यक दस्तावेजों के साथ समय-सीमा में आवेदन प्राप्त कर ग्राम पंचायत एवं नगर पालिका कार्यालय में प्रस्तुत कराए। उन्होंने कहा कि केन्द्र एवं राज्य शासन की महत्वावकांक्षी इस योजना का लाभ हितग्राहियों को शत-प्रतिशत मिल सके, इसके लिए प्रत्येक हितग्राही को इस योजना से जोड़ना होगा।

आज भी नेटवर्क विहीन हैं बैतूल जिले के 200 गांव

बैतूल। 21वीं सदी के भारत में, जहां टेक्नोलॉजी और संचार सेवाओं का विकास तेजी से हो रहा है, वहीं बैतूल जिले के लगभग 200 गांव अब भी नेटवर्क से वंचित हैं। भाजपा युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष दिनेश यादव ने संचार मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया से मुलाकात कर इन गांवों को बीएसएनएल नेटवर्क से जोड़ने की मांग की है।

दिनेश यादव ने संचार मंत्री को बताया कि बैतूल जिला प्राकृतिक सुंदरता से घिरा हुआ है, जहां पहाड़ों और पर्वत श्रृंखलाओं के बीच छोटे-छोटे गांव बसे हुए हैं। इन गांवों में मुख्य रूप से आदिवासी समाज निवास करता है, जो संचार सेवाओं की कमी का सामना कर रहा है। नेटवर्क न होने के कारण ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल पाता है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाई जा रही जननी एक्सप्रेस जैसी सुविधाएं भी इन गांवों तक नहीं पहुंच पातीं, जिससे प्रसव के समय महिलाओं को संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है, जो कई बार जानलेवा साबित होता है। 21वीं सदी के भारत की प्रगति के लिए ग्रामीण युवाओं और छात्रों का टेक्नोलॉजी से जुड़ना आवश्यक है। नेटवर्क की कमी के कारण यहां के युवा और छात्र शिक्षा और रोजगार के अवसरों से वंचित रह जाते हैं।

संचार मंत्री ने दिया आश्वासन

संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दिनेश यादव को आश्वासन दिया कि बैतूल जिले के नेटवर्क से वंचित क्षेत्रों में जल्द ही टावर लगाने का कार्य शुरू किया जाएगा। बीएसएनएल की 4जी सेवाएं इन ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाई जाएंगी, जिससे स्थानीय लोग भी डिजिटल युग के लाभ उठा सकें। इस मुलाकात से बैतूल जिले के ग्रामीणों में आशा की नई किरण जगी है। यदि संचार सेवाएं उपलब्ध हो जाती हैं, तो यह क्षेत्र भी विकास की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकेगा। अब देखना यह है कि संचार मंत्री के आश्वासन पर अमल कब तक होता है और बैतूल के ग्रामीण क्षेत्रों में नेटवर्क की समस्या कब समाप्त होती है।

हाईटेक लाइब्रेरी में बढ़ रहे विद्यार्थी और घट रही है सुविधा

विधायक बोले : उठाएंगे कदम, बेहतर होगी व्यवस्थाएं

बैतूल/मुलताई। मुलताई की एकमात्र हाईटेक लाइब्रेरी में कॉम्पिटेटिव एक्जाम की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही है और इसके साथ ही लाइब्रेरी में सुविधाओं का अभाव भी बढ़ता जा रहा है। इस लाइब्रेरी में नियमित अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राए लंबे समय से इस लाइब्रेरी में इंटरनेट डाटा, सीटिंग व्यवस्था, फर्नीचर जैसी आवश्यक सुविधाएं बढ़ाने की मांग करते आ रहे हैं किंतु कोई नतीजा नहीं नहीं निकाला। आज इंदिरा गांधी वार्ड में स्थित हाईटेक लाइब्रेरी में पढ़ने आने

वाले छात्र छात्राओं ने यहां होने वाली समस्याओं के लिए मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख से भाजपा कार्यालय में मुलाकात की। उन्होंने बताया कि यहां पर आने वाले छात्र-छात्राओं के लिए पर्याप्त फर्नीचर नहीं होने की वजह से वे यहां अध्ययन नहीं कर पा रहे हैं। वहीं पर्याप्त मात्रा में किताबें और इंटरनेट कनेक्शन नहीं होने की वजह से भी अध्ययन करने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। उन्होंने विधायक से इस ओर ध्यान देकर लाइब्रेरी में व्यवस्था बनाने की मांग की है। जिस पर मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने कहा कि वे इस दिशा में जल्द ही आवश्यक कदम उठाएंगे और छात्र-छात्राओं के हित में बेहतर व्यवस्थाएं करवाएंगे। फिलहाल उन्होंने नगर पालिका सीएमओ से चर्चा कर व्यवस्था बनाने के लिए कहा है।

भौरा हाईवे से धापाड़ा तक नवनिर्मित सीसी रोड दो सालों में भी अधूरा

समय पर निर्माण न होने से ग्रामवासियों में आक्रोश

बैतूल/भौरा। हाईवे से धापाड़ा तक नवनिर्मित सीसी रोड का निर्माण कार्य विगत 2 वर्षों से जारी है। ठेकेदार द्वारा रोड को छोड़-छोड़ कर बनाए जाने के कारण, बारिश के दिनों में रोड पर पड़ी मिट्टी के कारण भारी मात्रा में कीचड़ हो गई है, जिससे गाड़ियों के फिसल कर दुर्घटनाग्रस्त होने की घटनाएं बढ़ गई हैं। धपाड़ा रोड पर स्थित तवा पुल पर रेलिंग नहीं लगाई गई है। वहीं तवा पुल के नीचे गड्ढा एवं पुल पर दरारें आने लगी है। इस वजह से ग्रामवासियों में भारी आक्रोश व्याप्त है।

बुधवार को क्षेत्रीय विधायक गंगा सज्जन सिंह ने इस रोड का निरीक्षण किया। रोड की बेहद खराब हालत देखकर विधायक ने नाराजगी जताई। निरीक्षण के दौरान विधायक ने पाया कि ठेकेदार द्वारा निर्माण कार्य को अधूरा छोड़ देने के कारण रोड की स्थिति अत्यंत खराब हो गई है, जिससे आम जनता को काफी परेशानी हो रही है।धपाड़ा रोड पर स्थित तवा पुल पर रेलिंग नहीं लगाई गई है। वहीं तवा पुल के नीचे गड्ढा एवं पुल पर दरारें आने पर विधायक ने नाराजगी जाहिर की विधायक गंगा सज्जन सिंह ने पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों को फोन पर निर्देश दिए कि वे तुरंत रोड को व्यवस्थित और चलने लायक बनाने के उपाय करें। उन्होंने कहा, ÷यह स्थिति अस्वीकार्य है। जनता की सुरक्षा और सुविधा को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य को शीघ्रता से पूरा करना आवश्यक है। मैं संबंधित अधिकारियों से इस पर तत्काल कार्रवाई करने की अपेक्षा करता हूं।

ग्रामवासी मोनू उइके, मनीष अहके , कमलेश मेहरा, अजेय धुर्वे , सोनू काकोडिया ने भी विधायक के इस कदम का स्वागत कर उम्मीद जताई कि रोड जल्दी ही बनेगी और इसकी स्थिति जल्द ही सुधरेगी। पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों ने भी विधायक को आश्वासन दिया कि वे जल्द ही निर्माण कार्य को पूरा करवाने के लिए आवश्यक कदम उठाएंगे।

नशा मुक्त भारत अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु कलेक्टर ने किए नोडल अधिकारी नियुक्त

बैतूल। राष्ट्रीय कार्य योजना नशा मुक्त भारत अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बैतूल जिले में नोडल अधिकारी नियुक्त किए है। भारत सरकार द्वारा नशीली दवा की मांग में कमी लाने के लिए राष्ट्रीय कार्ययोजना का शुभारंभ 15 अगस्त 2020 से प्रारंभ किया था। इस योजना के पांचवे वर्ष में प्रवेश के पूर्व नशा मुक्त भारत अभियान के जिले में प्रभावी क्रियान्वयन के उद्देश्य से सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण द्वारा जिले में विभागीय नोडल अधिकारी नियुक्त किए जाने थे।

28 विभाग प्रमुख बने नोडल

नशा मुक्त भारत अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए पुलिस अधीक्षक, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, मुख्य वन संरक्षक वृत्त बैतूल, वन मंडलाधिकारी वन मंडल (उत्पादन) बैतूल, वन मंडलाधिकारी वन मंडल (सामान्य) बैतूल, प्राचार्य शासकीय जेएच महाविद्यालय, प्राचार्य शासकीय पॉलिटेक्निक कॉलेज, जिला शिक्षा अधिकारी, सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला श्रम पदाधिकारी, जिला आबकारी अधिकारी, जिला जनसंपर्क अधिकारी, सहायक संचालक पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक बैतूल, परियोजना अधिकारी शहरी विकास अभिकरण बैतूल, जिला परियोजना अधिकारी जिला शिक्षा केन्द्र बैतूल, जिला समन्वयक नेहरू युवा केन्द्र, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग बैतूल, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग, जिला परिवहन अधिकारी, अधीक्षक जिला जेल, जिला आपूर्ति अधिकारी, जिला खनिज अधिकारी, महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र, जिला रोजगार अधिकारी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत बैतूल, जिला योजना एवं सांख्यिकी अधिकारी तथा उप संचालक कृषि बैतूल का नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

नशा मुक्त भारत अभियान का उद्देश्य

नशा मुक्त भारत अभियान का उद्देश्य न केवल जनमानस को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जागृत करना है, बल्कि नशे के खिलाफ जन आंदोलन का रुप देना है ताकि नशे के खिलाफ हर नागरिक जुड़ कर अपना योगदान दे सकें। नशे पर पूर्णतया अंकुश लगाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा व्यापक कदम उठाए जा रहे हैं। दुनिया में कोई भी कार्य असंभव नहीं है, नशा भी छोड़ा जा सकता है, इसके लिए दृढ़ संकल्प लेना जरुरी है। व्यक्ति मनोरंजन के तौर पर नशे की शुरुआत करता है, लेकिन बाद में यह आदत में शुमार हो जाता है, जिससे पूरे परिवार की मानसिक स्थिति के साथ-साथ आर्थिक स्थिति भी खराब हो जाती है।

शिव मंदिर में महिलाओं ने की 12 घंटे की रामसत्ता का आयोजन

भौरा। नगर के माता मोहल्ला बिजादेही रोड स्थित शिव मंदिर में सावन माह के पावन पर्व के अवसर पर महिलाओं ने 12 घंटे की रामसत्ता का आयोजन किया। स्थानीय महिला मंडल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में भारी संख्या में महिलाएं और बच्चे शामिल

हुए। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 9 बजे मंदिर में भगवान शिव की पूजन आरती की। इसके बाद महिलाओं ने मिलकर भजन-कीर्तन शुरू किए, जिनमें भगवान श्रीराम, राधा कृष्ण एवं भगवान शिव की महिमा का गुणगान किया गया। आयोजित रामसत्ता में बड़ी संख्या में महिलाएं एवं बच्चियों ने भाग लिया. इस मौके पर महिलाओं ने भक्ति गीतों की धुन पर धमाल मचाया, युवतियां भी खूब थिरकीं जिससे रामसत्ता उत्सव के रंग-बिरंगी छटा निखर उठी. इस कार्यक्रम में बच्चों एवं महिलाओं द्वारा आकर्षक डांस की प्रस्तुति दी गई. खासकर भगवान भोलेनाथ के भजनों पर सबने धमाल मचाया। महिला मंडल ने इस अवसर पर कहा, सावन का महीना भगवान शिव की भक्ति का महीना है और हम चाहते थे कि इस पावन समय में सभी भक्त मिलकर भगवान की आराधना करें। रामसत्ता का आयोजन हमारे महिला मंडल का एक सामूहिक प्रयास है। जिसमें हम सभी ने मिलकर इस माह को और भी पवित्र बनाने का प्रयास किया है। यह आयोजन हमें एक-दूसरे के साथ जुड़ने और हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का एक माध्यम प्रदान करता है। हम सभी महिलाओं ने मिलकर इस कार्यक्रम की योजना बनाई और इसे सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत की है।

शिव मंदिर में आयोजित इस रामसत्ता ने न केवल भक्तों को आध्यात्मिक संतोष प्रदान किया, बल्कि उन्हें सामूहिकता और समर्पण की भावना से भी जोड़ा। नगरवासियों ने इस आयोजन की खूब सराहना की और महिला मंडल की इस पहल की प्रशंसा की। नागरिकों का कहना है कि सावन माह में इस प्रकार के धार्मिक आयोजनों से समुदाय में एकजुटता और भक्ति की भावना को बढ़ावा मिलता है। महिला मंडल की टीम के प्रयासों ने यह साबित कर दिया कि मिलकर किए गए कार्य न केवल सफल होते हैं, बल्कि समाज को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने का भी काम करते हैं। कार्यक्रम के समापन पर महिलाओं ने सामूहिक आरती की। भक्तों के लिए प्रसाद का भी विशेष आयोजन किया गया था।

नदी में डूबने से बुजुर्ग की हुई मौत

सड़क नहीं होने से 10 किलोमीटर कंधे पर शव लेकर चले ग्रामीण और पुलिसकर्मी

बैतूल। जिले के कई ग्रामीण इलाके ऐसे है जंहा आज तक पक्की सड़क नही बनी है जिसकी वजह से ग्रामीणों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है फिर चाहे वह गर्भवती महिला हो या फिर मृत व्यक्ति इनको गाड़ी बैल या पैदल चलकर कई किलोमीटर का सफर तय करना पड़ रहा है स ताजा मामला घोड़ाडोंगरी ब्लॉक के दानवाखेड़ा गांव का सामने आया जंहा सड़क नही होने के कारण एक मृत व्यक्ति के शव को पुलिसकर्मी एवं ग्रामीणों ने कंधो पर रखकर दस किलोमीटर पैदल चलकर पक्की सड़क तक लाया।

दरअसल बैतूल जिले की घोड़ाडोंगरी तहसील के दानवाखेड़ा गांव में गुरुवार को नदी में डूबने से उदन शाह 55 साल की मौत हो गई। जिसकी सूचना मिलने पर चोपना पुलिस मौके पर पहुंची। क्योंकि रामपुर से दानवाखेड़ा गांव तक करीब 10 किलोमीटर तक पक्की सड़क नहीं होने एवं बारिश के कारण कीचड़ होने के कारण गांव तक कोई वहां नहीं पहुंच सका। जिसके कारण चोपना पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से 100 को कंधे पर उठाकर करीब 10 किलोमीटर सड़क तक रामपुर लाया जहां से वहां के माध्यम से शव को घोड़ाडोंगरी अस्पताल लाया गया। जहां पर शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया। लेकिन दोबारा शव को दानवाखेड़ा ले जाने के लिए ग्रामीणों को रामपुर से दानवाखेड़ा तक कीचड़ भरी सड़क पर शव को कंधे पर उठा कर ले

जाना पड़ा। इसके बाद शव का अंतिम संस्कार किया गया। मृतक उदम शाह के भाई जगन सिंह ने बताया की उसका भाई नदी में नदी में डूब कर मर गया था जिसके शव को दानवा खेड़ा से रामपुर गांव तक कंधों पर रखकर दस किलोमीटर पैदल चलकर लाए थे पोस्टमार्टम के बाद दोबारा फिर शव दस किलोमीटर चलकर वापिस अंतिम संस्कार के लिए गांव लेकर गए थे गांव में सड़क नही होने से इसी तरह परेशान होना पड़ता है।

चोपना थाना के ए एस आई राजेश कलाम ने बताया की दानवाखेड़ा गांव निवासी उदन शाह 55 साल अपनी दूसरी पत्नी के घर से पहली पत्नी के घर जा रहा था। लेकिन वह घर नहीं पहुंचा। जिस पर परिजनों ने उसकी तलाश शुरू कर दी। आसपास तलाश करने के बाद गांव के ही पास नदी में उसका शव मिला। जिसकी सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे। गांव तक पहुंचाने के लिए पक्की सड़क नहीं होने के कारण जैसे तैसे गांव तक पहुंचे। इसके बाद ग्रामीणों की मदद से पुलिसकर्मियों एसआई राकेश सरियाम, एएसआई राजेश कलाम, आरक्षक विवेक यादव,आसुतोष भोजने और 100 डायल के दीपक मालवी ने शव को कंधे पर उठाकर करीब 10 किलोमीटर दूर रामपुर तक शव को लाया गया। जिसके बाद रामपुर से शव को वाहन से घोड़ाडोंगरी अस्पताल लाया गया। जहां पर शव का पोस्टमार्टम कराया गया।

मुद्दा

डॉ. आरके पालीवाल

लेखक आयकर विभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी हैं

फ्री बीज के भार में चरमराती सड़क, पानी, बिजली व्यवस्था

सरकार का सबसे ज़रूरी काम आम नागरिकों के लिए मूलभूत सुविधाओं का निर्माण और उनका समुचित रखरखाव करना है। विश्व भर में किसी सरकार का मानक मूल्यांकन भी इसी दृष्टि से किया जाता है। इधर हमारी केंद्र और राज्यों की सरकारें सत्ता प्राप्ति हेतु सस्ती लोकप्रियता से वोट बटोरने के चक्कर में फ्रीबीज के शॉर्ट कट में बुरी तरह फंसकर रह गई हैं। सत्ता का यह शॉर्ट कट विकास के लिए शार्ट सर्किट की तरह खतरनाक साबित हो रहा है। यह एक तरह से ऐसा चक्रव्यूह है जो सरकारों ने सत्ता प्राप्त करने के लिए लोगों को सम्मोहित करने के लिए रचा था लेकिन अब सरकार और उसका पूरा अमला उसके अपने रचे चक्रव्यूह में फंसकर कसमसा रहा है।

फ्रीबीज की आदत इतनी खतरनाक है कि यह कर्मयोगी को भी महाआलसी बना सकती है। ऐसे में यदि सरकार इन मुफ्ती योजनाओं को बंद करती है तो जबरदस्त एंटी इनकंबेंसी फैक्टर बढ़ने का डर है और इन्हें अनंत काल तक चलाने के लिए फंड का जुगाड करना मुश्किल ही नहीं असंभव है। ऐसी योजनाएं पहले सरकार की जमा पूंजी खत्म करती हैं। उन्हें जारी रखने के लिए दूसरे बेहद जरुरी सार्वजनिक कार्यों का फंड डायवर्ट करना पड़ता है। मध्य प्रदेश में यही हालात हैं। यहां सड़क, पानी, स्वास्थ, शिक्षा और बिजली आदि तमाम महत्त्वपूर्ण विभाग फंड की कमी से सिसक रहे हैं। ग्रामीण सड़कें तो दूर राजधानी भोपाल की सड़कों की रिपेयर नहीं होने से नागरिकों में भयंकर रोष है। पीडब्ल्यूडी के अधिकारी लोगों के फोन भी नहीं उठाते ऐसे में ऑनलाइन शिकायतों का निवारण दूर की कौड़ी है। मजबूर होकर युवा नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।

भोपाल का ही उदाहरण लें तो कुछ दिन पहले भोजपुर को महालोक बनाने की घोषणा हुई है लेकिन ग्यारह मील से भोजपुर जाने वाली सड़क की हालत इतनी जर्जर है कि उसमें सड़क कम गड्ढे ज्यादा है। सावन के महीने में शिव भक्तों का भोजपुर पहुंचना मंगल ग्रह पर जाने जैसा कठिन काम लगता है। आए दिन गड्ढों में फंसकर गाड़ियां खराब होना और बाइक फिसलने की दुर्घटनाएं हो रही हैं। यही स्थिती बारिश से होने वाली बाढ़ जैसी स्थिति की है। नालों की साफ सफाई नहीं होने से सड़कों, कॉलोनी के पार्कों और घरों में पानी भर रहा है। सड़ते पानी से होने वाली बीमारियां बढ़ रही हैं। आपसी बातचीत में अधिकारी स्वीकार करते हैं कि व्यवस्थाओं के समुचित

रखरखाव के लिए फंड की अत्यधिक कमी है। जो थोड़े से फंड मिलते हैं वे मुख्यमंत्री और मंत्रियों के आसपास और चार इमली जैसे बड़े अफसरान के वी आई पी इलाकों की सड़क, पानी, बिजली आदि की व्यवस्था को चाक चौबंद रखने में जाया हो जाते हैं।

यदि पिछले पांच वर्षों के लेखा जोखा की ठीक से पड़ताल की जाए तो साफ हो जाएगा कि पीडब्ल्यूडी जैसे जरुरी विभाग में फंड की कितनी कमी है। साथ ही यह भी जांच का विषय है कि इस दौरान किन किन सड़कों पर किन किन ठेकेदारों के माध्यम से कागजों में रिपेयर या कागजी रिपेयर की खानापूर्ति हुई है और इसके लिए कितना भुगतान हुआ है। अक्सर यह आरोप भी लगते रहे हैं कि रिपेयर आदि के काम में कमीशनखोरी का प्रतिशत काफी बढ गया है जिसका सीधा प्रतिकूल असर कार्य की गुणवत्ता पर पड़ता है। बहरहाल यह नागरिकों के लिए भी बड़ा सबक है कि वे धर्म और जाति के नारों एवम मुफ्त की छोटी छोटी रकम से ही राजनीतिक दलों को वोट देते रहेंगे या अपने इलाके की सड़क, बिजली, पानी, स्वास्थ और शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए सरकार पर दबाव बनाते हैं ताकि नागरिकों को रोज रोज की दिक्कतों के नरक से निजात मिल सके और सरकारों को हमारा परिवेश साफ सुथरा और चाक चौबंद रखने के लिए बाध्य होना पड़े।

देवास जिले में परिवहन विभाग ने चैकिंग अभियान चलाकर यात्री तथा स्कूल बसों की जांच की

परिवहन विभाग ने बसों की जांच कर लगभग 35 हजार रूपये शुल्क वसूला

देवास। देवास जिले में संचालित स्कूल बसों एवं यात्री बसों में सुरक्षा मानकों एवं आवश्यक दस्तावेजों की जांच के लिए कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता के निर्देशानुसार परिवहन विभाग देवास के दल द्वारा सघन चैकिंग अभियान चलाया कर यात्री बसों तथा स्कूल बसों को चेक किया गया। चैकिंग कार्यवाही के दौरान नियम विरूद्ध संचालन पाए जाने पर चालानी कार्यवाही कर लगभग 35 हजार रूपये का शमन शुल्क वसूल किया गया।

जिला परिवहन अधिकारी श्रीमती जया वसावा ने बताया कि माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा जारी की गई गाईड लाईन के अनुसार स्कूलों में जाकर स्कूल बसों का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया गया। जिसमें देवास शहर के सेन्ट्रल इण्डिया एकेडमी, सेन थॉम एकेडमी, डी.पी.एस. एकेडमी, वसुन्धरा एकेडमी, मालवांचल एकेडमी सहित अन्य स्कूलों वाहनों का निरीक्षण किया तथा स्कूल प्रबंधन को निर्देशित किया गया कि वे छात्र-छात्राओं को लाने एवं ले जाने के लिए वाहन के संचालन के समय सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखें। जिला परिवहन अधिकारी श्रीमती जया वसावा ने बताया कि अभियान के तहत यात्री बसों में ओव्हर लोड तथा दस्तावेजों की जांच की गई। चैकिंग के दौरान वाहन चालकों तथा स्कूल बस संचालकों को निर्देशित किया गया कि वर्तमान में वर्षाकाल होने के कारण बारिश के दौरान पुल, पुलिया अथवा रपटों पर जल भराव होने की स्थिति में वाहन को पार ना करें।

छेड़छाड़ करने वाले आरोपी को 1 वर्ष का सश्रम कारावास

नरसिंहपुर। न्यायालय न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी गोटेगांव, जिला नरसिंहपुर के न्यायालय द्वारा छेड़छाड़ करने के प्रकरण में आरोपी बसंत चैधरी , निवासी - ग्राम बौछार, थाना- ठेमी, जिला - नरसिंहपुर को दोषसिद्ध पाते हुए भा.द.वि. की धारा 456 में 06 माह का सश्रम कारावास एवं 500/-रुपये अर्थदण्ड तथा धारा 354क, 354ग, 354घ, में 01-01 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 500-500/- रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया है। जिला मीडिया सेल प्रभारी द्वारा बताया गया कि घटना दिनांक 15.07.2021 स्थान प्रार्थिया के घर ग्राम बौछार की है। फरियादी का घर ग्राम बौछार में है। घटना 15 जुलाई 2021 को होकर रात के एक बजे की है। फरियादी अपने दोनों बच्चों के साथ घर की दहलान में सो रही थी तभी उसे लगा की बगल में आकर कोई सो गया। फरियादी ने उठकर देखा तो आरोपी बसंत चैधरी सोये हुए थे तो फरियादी चिल्लाई तो आरोपी उठकर भाग गया। घटना के पश्चात आरोपी ने माफी मांग ली थी। उसके बाद 28 मार्च 2022 को फरियादी की तबीयत खराब थी तो वह बौछार बस स्टैंड पर नरसिंहपुर जाने के लिए बस का इंतजार कर रही थी इतने में आरोपी वहां आया और बोला कि मैं छोड़ देता हूं। तो फरियादी आरोपी के साथ मोटरसाइकिल से नरसिहपुर चली गई एवं वापिस आरोपी के साथ ही जब लोटकर वापिस आ रही थी तो आरोपी सूरवारी के पास बोले कि मेरा काम तो हुआ नहीं तो फरियादी ने पूछा कि कौन सा काम नहीं हुआ। तो बोले की रात के 11 बजे अपना दरबाजा खुला रखना। इसके बाद फरियादी ने कहा कि चाचा गाडी रोको तुम नहीं सुधरोंगे तुम्हारे मन में पाप भरा है। आरोपी बोला की गलती हो गयी दोबारा ऐसा नहीं होगा और यह बात किसी को नहीं बताना। इसके बाद में आरोपी के साथ बैठकर घर बापिस आ गयी। जब भी फरियादी घर से बाहर नहाने या बासरूम जाती है तो गलत निगाहों से देखते रहते हैं। जिस पर से फरियादी ने उक्त घटना रिपोर्ट थाना ठेमी में लेख करायी थी। प्रार्थी की उक्त रिपोर्ट के आधार पर अभियुक्त के विरुद्ध थाना ठेमी में अपराध क्रं. 203/2022 भा.द.वि. की धारा 456, 354क,454ग,354घ, के अंतर्गत पंजीबद्ध कर प्रकरण विवेचना में लिया गया। आहत घटना स्थल को नक्शा मौका, पंचनामा बनाया गया एवं अनुसंधान पूर्ण होने पर अभियोग पत्र न्यायालय के समक्ष पेश किया गया।

केन्द्रीय जेल एवं लीगल एड क्लीनिक का निरीक्षण

नरसिंहपुर। प्रधान जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री कमल जोशी नरसिंहपुर के मुख्यातिथ्य एवं श्री वैभव सक्सेना सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की उपस्थिति में केन्द्रीय जेल एवं लीगल एड क्लीनिक का निरीक्षण किया एवं विधिक जागरूकता एवं साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधान जिला न्यायाधीश द्वारा विचाराधीन बंदियो एवं दोषसिद्ध बंदियो को प्राप्त विधिक अधिकारो के संबंध में अवगत कराते हुए जिला प्राधिकरण नरसिंहपुर द्वारा बंदियो को निःशुल्क प्रदान की जा रही विधिक सहायता पर प्रकाश डाला एवं उन्हे अवगत कराया कि लीगल एड क्लीनिक में जेल विजिटिंग लॉयर एवं पैरालीगल वालेंटियर बंदियो को विधिक सहायता प्रदान करने मे सहायता करेगे। प्रधान जिला न्यायाधीश द्वारा बंदियो को स्वस्थ रहने एवं जेल में रहने के दौरान नया सीखते रहने की समझाईश दी एवं जिन कैदियो को उनके अधिवक्ता से मिलने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है उसकी व्यवस्था जेल प्रशासन एवं विधिक सेवा प्राधिकरण को करने हेतु निर्देशित किया।

शासन निर्देशित राजस्व महाअभियान की मुख्यालय पर उड़ रही धज्जियां..

कलेक्टर के बस्ते से बाहर निकल नहीं पा रहा 2020 का प्रतिवेदन

नर्मदापुरम। मध्यप्रदेश शासन के निर्देश पर पूरे प्रदेश में चलाए जा रहे राजस्व महा अभियान के तहत तमाम कलेक्टरों को अपने अपने क्षेत्र में अनुविभागीय अधिकारी, तहसीलदार के न्यायालय में राजस्व प्रकरणों की गंभीरता से समीक्षा कर उनके नामांतरण बंटवारा, अभिलेख दुरुस्ती, समग्र ई- केवाईसी, खसरा लिंकिंग और नक्शे में तरमीम की न्यायालय वार विस्तार से समीक्षा किया जाना जरूरी है। हर राजस्व मामलों में उनके निदान की कोशिश को लेकर तह तक पहुंचने के इस महत्वपूर्ण अभियान को प्रदेश में भले ही सफलता प्राप्त हो लेकिन अंग्रेजी शासनकाल की बनी सबसे पुरानी संभागीय मुख्यालय कमिश्नरी नर्मदापुरम पर यह अभियान सफल होगा संदेश पैदा करता है। राजस्व महाअभियान के अंतर्गत कलेक्टर सोनिया मीना ने हालांकि वीडियों कांफ्रेंसिंग के माध्यम से नर्मदापुरम जिले के समस्त एसडीएम एवं तहसीलदारों की न्यायालय वार राजस्व प्रकरणों की हालिया समीक्षा की है। कलेक्टर ने समस्त एसडीएम एवं तहसीलदारों से अपने-अपने क्षेत्रों में नामांतरण, बंटवारा, अभिलेख दुरूस्ती, समग्र ई-केवाईसी एवं खसरा लिंकिंग और नक्शे में तरमीम की न्यायालय वार विस्तार से समीक्षा की। बैठक में कलेक्टर ने समस्त एसडीएम एवं तहसीलदारों से आरसीएमएस के नवीन प्रकरण एवं

आरसीएमएस के टाइम लाइन क्रास प्रकरण की जानकारी ली, और उन्हें समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित इस वीडियो कान्फ्रेंसिंग बैठक में संयुक्त कलेक्टर अनिल जैन, तहसीलदार देवशंकर घुर्वे सहित राजस्व अधिकारी मौजूद थे। पर हमेशा के भांति राजस्व प्रकरण क्रमांक 121/ अ-6 / 1998-99 प्रकरण निरस्त करने बाबत। पट्टा प्रकरण क्रमांक 4 / अ- 20 (1)/ 1988-89 को निरस्त करने बाबत। शीट क्रमांक 43 के प्लाट क्रमांक 15/3 नजूल खेल मैदान एस एन जी स्टेडियम के दक्षिण में बनी दुकानों का आधिपत्य लिए जाने बाबत मामला इस महा अभियान में भी अलमारी के बाहर निदान के लिए निकाले नहीं गये.. ! और तो और खुद कलेक्टर के बस्ते में 2020 में नजूल अधिकारी द्वारा उन्हें अंतिम प्रतिवेदन आदेश हेतु प्रस्तुत बंद नोटशीट इस महा अभियान में बाहर नहीं आ पाई। ऐसे में कैसे माना जा सकता है कि मुख्यमंत्री के राजस्व महा अभियान की सार्थकता मुख्यालय पर शासन की मंशानुरूप आकार पा रही है।

विश्व स्काउट स्कार्फ दिवस का आयोजन

जिले की विभिन्न संस्थाओं में स्कार्फ डे मना

देवास। भारत स्काउट गाइड राज्य मुख्यालय भोपाल के निर्देशानुसार एवं जिला शिक्षा अधिकारी पदेन जिला कमिश्नर स्काउट हरीसिंह भारतीय के आदेशानुसार शा नूतन उ मा वि देवास में विश्व स्काउट स्कार्फ दिवस का आयोजन किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता कराई गई जिसका विषय स्कार्फ रखा गया। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में स्कार्फ दिवस के महत्व के बारे में सभी को बताया । चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर आने वाले बच्चों को

अतिथियों द्वारा उपहार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही विगत माह हिमालय वुड बैज का कोर्स सफलता पूर्वक पूर्ण करने पर अश्विन घोरपडे, जितेन्द्र मंडलोई व कोमल चौधरी को एच डब्लू बी का स्कार्फ व वागल पहनाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कमल सिंह राजपूत, जितेन्द्र सौलंकी, कोमल मालवीय, शर्मा का सराहनीय योगदान रहा। तत्पश्चात जिला शिक्षा अधिकारी हरीसिंह भारतीय, सहायक संचालक शिवनंदन प्रजापति, सावन पाटीदार, अजय सोलंकी वि खंड शिक्षा अधिकारी देवास एवं डाइट प्राचार्य एच एल खुशाल को स्कार्फ पहनाकर स्काउटिंग से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन जितेन्द्र मंडलोई ने किया व आभार शिवचरण अंगोरिया ने माना ।

हेमेंद्र निगम काकू ने बताया कि कार्यक्रम के विष्णु वर्मा जिला मुख्य आयुक्त, राजश्री काले जिला कमिश्नर गाइड, मनोज जोशी जिला संघ अध्यक्ष, अशोक साहू जिला कमिश्नर कब, पुष्पा भारती, संगीता वाटसन जिला संघ उपाध्यक्ष व मनोज उपाध्याय सहा वि ख शिक्षा अधिकारी खातेगांव के आतिथ्य में किया गया अतिथियों ने मां सरस्वती जी के चित्र पर माल्यार्पण किया। तत्पश्चात कार्यक्रम की शुरुआत ईश प्रार्थना के साथ की। सभी अतिथियों का स्वागत स्काउट एवं गाइड परम्परा अनुसार स्कार्फ व वागल से शिवचरण अंगोरिया, देवकरण सोलंकी, भूपेंद्र शर्मा, हेमेंद्र आर्य,कोमल चौधरी, वंदना वर्मा ने किया । मनोज पटेल डी ओ सी ने स्वागत भाषण व स्कार्फ दिवस की जानकारी दी। साथ ही

ब्रिज न बनने के चलते स्कूली बच्चे जान जोखिम में डाल रहे

उफनती नदी में नाव के सहारे स्कूल जाते नौनिहाल बच्चे

नरसिंहपुर। जिले में आज भी बच्चे एक ब्रिज न बनने के चलते जोखिम में जान का सफर कर रहे हैं । मामला नरसिंहपुर जिले की तेंदूखेड़ा विधानसभा के बेलखेड़ी ग्राम पंचायत का है, जहां के जैथारी गांव से बच्चों को स्कूल के सफर के लिए उफनती शक्कर नदी में नाव के सहारे कल्याणपुर गांव आना होता है ,करीब 1000 आबादी वाले इस गांव में कई बच्चों ने सिर्फ इस जोखिम भरे सफर के चलते पढ़ाई छोड़ दी है तो वही 30 से 40 छात्र छात्राएं आज जोखिम का सफर करने को मोहताज हैं । खास बात यह है कि शक्कर नदी के इस घाट पर दोनों छोरों को जोड़ने वाला करीब 186 मी का ब्रिज आज भी निर्माणाधीन है अवस्था में है जिसे आज से 4 साल पहले दिसंबर 2020 में पूरा होना होना था बावजूद विकास की वानगी भरी तस्वीर दिखाने आज भी अधूरा पड़ा है इस ब्रिज का काम राजनांदगांव की मदनलाल एंड पार्टनर्स कंपनी कर रही है जिसे अपने काम को 4 साल पहले पूरा करना था पर आज भी काम पूरा नहीं हो सका और हालात ये हैं कि गांव सहित स्कूल के बच्चे जान जोखिम रखकर सफर कर रहे हैं । खास बात यह है की मध्य प्रदेश के स्कूल शिक्षा मंत्री राव प्रताप सिंह तेंदूखेड़ा विधानसभा से पहली बार विधायक चुने गए थे।

एनएचडीसी के रजत जयंती समारोह का भव्य आयोजन

भोपाल। प्रदेश के अग्रणी जलविद्युत उत्पादन कंपनी एनएचडीसी लिमिटेड का रजत जयंती समारोह बड़े ही भव्य व धूमधाम से मनाया गया। मुख्य सांस्कृतिक समारोह 1 अगस्त 2024 गुरुवार को रवींद्र भवन, भोपाल के हंसध्वनि सभागार मे आयोजित किया गया जहां संगीत संध्या मे सांस्कृतिक कलाकारों की प्रस्तुति ने सभी को

मंत्रमुग्ध कर दिया। सांस्कृतिक समारोह में प्रसिद्ध पार्श्व गायिका पलक मुच्छल- पलाश मुच्छल की संगीत की मनोरम प्रस्तुति ने समस्त उपस्थित अतिथिगणों का दिल जीत लिया ।

समारोह का शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एनएचपीसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा एनएचडीसी के अध्यक्ष श्री राजेंद्र प्रसाद गोयल,

एनएचडीसी के निदेशक मंडल के सदस्यों सहित शासन के अन्य वरिष्ठ अथितियों द्वारा दीप प्रज्जवलन से हुआ ।

मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र प्रसाद गोयल ने अपने सम्बोधन में कहा कि एनएचडीसी ने अपनी स्थापना से ही प्रदेश को ऊर्जा उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। श्री गोयल ने बताया कि इस वर्ष निगम ने दो सोलर परियोजनाओं ग्राउंड माउंटेड सांची सोलर प्रोजेक्ट (8 मेगावाट) तथा ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर प्रोजेक्ट (88 मेगावाट) का सफल संचालन शुरू किया है इससे प्रदेश की विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ेगी। निगम नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के विकल्पों के माध्यम से प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयासरत हैं। श्री गोयल ने मध्यप्रदेश को समृद्ध व खुशहाल बनाने व निगमीय सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत किए जाने वाले कार्यों के लिए एनएचडीसी की भूमिका की सराहना की ढ श्री राजेंद्र प्रसाद गोयल ने बताया कि एनएचडीसी विद्युत आवश्यकता की पूर्ति के साथ साथ, प्रदेश में सिंचाई, मत्स्य पालन, खाद्यान्न उत्पादन, एवं पर्यटन को बढ़ावा देने के अलावा ऊर्जा संरक्षण जागरूकता जैसी गतिविधियों से प्रदेश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं ढ उन्होंने निगम की भावी परियोजनाओं हेतु मध्यप्रदेश शासन से सहयोग दिए जाने के प्रति आभार व्यक्त किया । एनएचडीसी के 25वें स्थापना दिवस की बधाई देते हुए उन्होंने निगम को सफलताओं की ओर सतत अग्रसर रहने के लिए शुभकामनाएं दी ।

इस अवसर पर श्री राजीव जैन, प्रबंध निदेशक एनएचडीसी ने निगम की विभिन्न उपलब्धियों और निगम द्वारा किए कार्य व भविष्य की चुनौतियों से सभी को अवगत कराया एवं एनएचडीसी के पिछले वर्षों की गौरवपूर्ण उपलब्धियों की जानकारी दी और निगम के समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाइयां दी । सांस्कृतिक संध्या में मध्यप्रदेश शासन के कई गणमान्य अतिथियों सहित एनएचडीसी के अधिकारी एवं कर्मचारी व उनके परिवारजन उपस्थित रहे ।

एनएचडीसी लिमिटेड, एनएचपीसी लिमिटेड एवं मध्य प्रदेश शासन का एक संयुक्त उद्यम है, जो कि सन् 2000 में स्थापित हुई थी । वर्तमान मे इसकी दो परियोजनाएं इंदिरा सागर पावर स्टेशन (1000 मेगावाट) व ओंकारेश्वर पावर स्टेशन (520 मेगावाट) तथा दो सोलर परियोजनाओं ग्राउंड माउंटेड सांची सोलर प्रोजेक्ट (8 मेगावाट) तथा ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर प्रोजेक्ट (88 मेगावाट) द्वारा उत्पादित विद्युत शत प्रतिशत मध्यप्रदेश को दी जा रही है । एनएचडीसी नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन के अन्य विकल्पों के माध्यम से भी प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

राइट क्लिक

सुप्रीम कोर्ट के फैसले से नया अंतरजातीय संघर्ष शुरू होगा

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

देश में एससी/एसटी (अनुसूचित जाति/ जनजाति) वर्ग में भी उप श्रेणी यानी कोटे में कोटा को मंजूरी और इन दोनों आरक्षित श्रेणियों में भी ओबीसी की तर्ज पर क्रीमी लेयर तय करने के सुप्रीम को 6:1 के बहुमत से दिए फैसले के दूरगामी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिणाम होंगे। हालांकि कुछ लोगों ने इसे संविधान की मूल भावना के खिलाफ बताया है, लेकिन ज्यादातर हल्को में इस फैसले का स्वागत हुआ है, क्योंकि देश में आरक्षण की जो कहानी 1882 में विलियम हंटर और ज्योतिबा फुले ने शुरू की थी, करीब डेढ़ सौ साल बाद इसमें एक नया और निर्णायक मोड़ आ गया है। आजादी के बाद 70 सालों से सरकारी नौकरियों और शिक्षण संस्थानों में आरक्षण की लाभार्थी जातियों के भीतर से आवाज उठने लगी थी कि आरक्षण का फायदा भी समान रूप से सभी जातियों को नहीं मिल रहा है। लिहाजा इस लाभ का वितरण नए और न्यायसंगत तरीके किया जाए। दूसरे शब्दों में कहें तो आरक्षण का लाभ उठाकर आर्थिक व सामाजिक बेहतरी हासिल करने वाला एक नए किस्म का 'ब्राह्मणवाद' इन जाति वर्गों में भी आकार लेने लगा है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले को सामाजिक न्याय के इसी आलोक में देखा जाना चाहिए। क्योंकि आरक्षित वर्ग के भीतर ही हितों के इस टकराव को लंबे समय तक अनदेखा नहीं किया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के बाद राज्य अपने यहां आरक्षित श्रेणियों में अधिक लाभान्वित और कम लाभान्वित जातियों का वर्गीकरण कर सकेंगे। हालांकि यह काम बहुत सावधानी और पारदर्शिता से करना होगा। इसके लिए सही आंकड़े जुटाने होंगे। केवल वोटों की गोलबंदी के बजाए आरक्षण के समान वितरण की समुचित प्रक्रिया अपनानी होगी।

इस फैसले का विरोध जिन हल्कों से हो रहा है अथवा होगा, वे मुख्यतः वो जातियां हैं, जिन्हें आरक्षण का तुलनात्मक रूप से ज्यादा लाभ मिला है। कई जगह तो यह अब पीढ़ीगत रूप में भी बदल गया है। दरअसल 'ब्राह्मणवाद' का सबसे बड़ा दोष भी उसका जन्मगत होना ही है। पीढ़ी दर पीढ़ी आरक्षण ने भी इसी प्रवृत्ति को आरक्षित वर्ग में पनपाया है। आरक्षण की सुविधा 'जन्मसिद्ध अधिकार' में बदलने लगी है। हालांकि इस मान्यता के विरोधी यह कमजोर तर्क जरूर देते हैं कि पैसे और पद भर से वो सामाजिक प्रतिष्ठा और समानता नहीं मिलती, जिसकी कि दलित और आदिवासियों को पहली दरकार है। मन से सामाजिक समता को स्वीकार करना और उसका आदर करना एक लंबी और दीर्घकालीन प्रक्रिया का हिस्सा है। जो जातिवाद की जो बुराई सैंकड़ों सालों में हिंदू समाज में गहरे तक घर कर गई है, उसका उच्चाटन होने में समय लगेगा। उसके लिए कानून के साथ-साथ मानसिकता बदलने की जरूरत है। धीरे-धीरे वह बदल भी रही है। लेकिन एक जातिविहीन अथवा समतामूलक समाज 'काल्पनिक आदर्श' स्थिति ज्यादा है। इस बात का कोई ठोस पैमाना नहीं है कि वह कौन सी स्थिति होगी जिसे सौ फीसदी समता कहा जाएगा। क्योंकि सामाजिक समता के कई कारक है और समता अपने आप में परिस्थिति, अवसर और संसाधन सापेक्ष शब्द है। दूसरे, तथाकथित ऊंची और नीची जातियों के बरक्स खुद आरक्षित जातियों के भीतर भी अंतरजातीय भेदभाव और छुआछूत कम नहीं है। इसे खत्म करना भी उतना ही जरूरी है।

आरक्षित जातियों में अवसरों का समान वितरण कैसे हो, इसके राजनीतिक रूप से प्रयास तो पहले से ही शुरू हो गए थे। मसलन दलितों में अति दलित अथवा महादलित, पिछड़ों में अति पिछड़ों को श्रेणियों में बांटकर उन्हें आरक्षण के लाभ देने की कोशिशें कुछ राज्यों ने पहले से शुरू कर दी थीं। लेकिन इसे सामाजिक न्याय के बजाए वोटों की गोलबंदी की पुनर्रचना के प्रयत्न के रूप में ज्यादा देखा गया। खासकर नीतीश कुमार ने बिहार में इसकी पहल तेजी की थी।

दुर्भाग्य से यह सच्चाई है कि आप किसी को कितना भी आरक्षण दें, लेकिन उसके वास्तविक लाभार्थी कुछ लोग अथवा जातियां ही होती हैं। अगर दलित या अनुसूचित जाति की ही बात करें तो देश में उनकी 16.6 फीसदी आबादी के आधार पर सरकारी नौकरियों में व शिक्षण संस्थानों में मोटे तौर पर 15 प्रतिशत और आदिवासियों को 8.6 प्रतिशत आबादी के हिसाब से 7.5 फीसदी आरक्षण दिया गया है। अनुसूचित जाति वर्ग में यह आरक्षण कुल 1108 जातियों में बंटना होता है, लेकिन व्यवहार में वैसा होता नहीं है, क्योंकि सभी की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति व चेतना अलग-अलग है। यही कारण है कि जिन आरक्षित जातियों में अपने हितों और स्वाभिमान को लेकर ज्यादा चेतना है, वो आरक्षण का लाभ उतना ही ज्यादा उठा पाते हैं। मोटे पर एससी श्रेणी में आरक्षतण का फायदा करीब एक दर्जन जातियों ने ज्यादा उठाया है, जैसी कि जाटव, महार, मेहरा और अहिरवार आदि। लेकिन उन्हीं की एक हजार से आरक्षित बंधु जातियां इस मामले में बहुत पीछे छूट गई हैं। अगर इस श्रेणी में सब कोटा होगा तो आरक्षण सुविधा का लाभ ज्यादा बेहतर और न्यायसंगत तरीके से वितरित हो सकता है। यही बात अनुसूचित जनजाति (आदिवासी) वर्ग के लिए भी लागू होती है। वहां भी 744 जनजातियां हैं, लेकिन रिजर्वेशन का लाभ मुख्य रूप से गोंड, भील, संथाल आदि आदिवासियों ने ही उठाया है। इसका एक प्रमुख कारण शिक्षा और जागरूकता का अभाव भी है। काफी कुछ यही स्थिति अति पिछड़ा वर्ग में भी हैं, जहां 5013 जातियां हैं, लेकिन उन्हें प्रदत्त 27 फीसदी आरक्षण से लाभान्वित होने वाली प्रमुख जातियां यादव, कुणबी, कुर्मी, कलार, सोनी आदि ही हैं। हालांकि ओबीसी में सुप्रीम कोर्ट ने क्रीमी लेयर की शर्त लगा रखी है। जिसके मुताबिक वर्तमान में 8 लाख रू. वार्षिक आय से ज्यादा वाले परिवार ओबीसी आरक्षण का लाभ नहीं ले सकते। जस्टिस रोहिणी आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में ओबीसी में सब कोटा बनाने की सिफारिश की है, जिस पर सरकार अभी खामोश है।

सुप्रीम कोर्ट के ताजा फैसले में जिन चार जजो ने क्रीमी लेयर की शर्त को एससी/ एसटी में भी लागू करने का सुझाव दिया है, उनमें जस्टिस बी. आर. गवई भी शामिल हैं। इसके पीछे भाव यह है कि जिन लोगों को आरक्षण की वजह आर्थिक सामाजिक उत्थान हो जाए, वो आरक्षित सीट अपने दूसरे समाज व जाति बंधुओंके लिए खाली करें। खास बात यह है कि जस्टिस गवई स्वयं अनुसूचित जाति से हैं और योग्यता के आधार पर सुप्रीम कोर्ट के जज बने हैं।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर अपनी प्रतिक्रिया में बाबा साहब अंबेडकर के पोते प्रकाश अंबेडकर ने कहा कि यह संविधान की मूल भावना के विपरीत है, क्योंकि आरक्षण जातीय समानता के मूल भाव से दिया गया था न कि आरक्षित जातियों में भी वर्गीकरण करने के उद्देश्य से। प्रकाश अंबेडकर ने यह भी कहा कि अगर सब कोटा बनाना ही है तो अनारक्षित (अगड़ी) जातियों में भी इसे लागू किया जाना चाहिए। लेकिन वो यह भूल गए कि मोदी सरकार ने अनारक्षित जातियों के लिए आर्थिक पिछड़ेपन के आधार पर शेष बचे 50 फीसदी में से 10 प्रतिशत आरक्षण दे दिया है। यह भी सब कोटा ही है। यहां अनारक्षित और आरक्षित जातियों में अवसरों और प्रगति का बड़ा अंतर इसलिए दिखता है, क्योंकि अनारक्षित श्रेणी में जातियों की संख्या न्यूनतम यानी 46 ही हैं, जिसमे अल्पसंख्यक आबादी (ओबीसी को छोड़कर) भी शामिल है। अनारक्षित 50 फीसदी का लाभ इन्हीं में वितरित होता है। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि आरक्षित जातियो में से कोई भी अपना वर्ग छोड़कर इन अनारक्षित जातियों में शामिल नहीं होना चाहता। जबकि यहां अवसरों का वितरण बहुत कम जातियों में होता है। उल्टे जो जातियां अभी अनारक्षित हैं, वो भी आरक्षित में जाने के लिए लड़ रही है, जैसे कि महाराष्ट्र में मराठा जाति।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर अमल होने में वक्त लगेगा। क्योंकि इसके लिए जरूरी डाटा इकट्ठा करना होगा। हो सकता है कि सरकार अगले साल होने वाली जनगणना में इसे भी शामिल कर ले। लेकिन उसके भी पहले नई राजनीतिक गोलबंदियां तेज होंगीं। एससी/ एसटी में आरक्षण का ज्यादा लाभ उठाने वाली जातियां इस फैसले का विरोध करेंगी तो अल्प लाभ पाने वाली जातियां इसके समर्थन में जुटेंगी। यानी आरक्षित वर्गो में एक नया संघर्ष शुरू होने की संभावना है, जो सामाजिक न्याय और अवसरो की समानता की कोख से ही पैदा होगा। जाहिर है कि राजनीतिक दल इसका अपने ढंग से लाभ उठाएंगे। इस साल के अंत में महाराष्ट्र, हरियाणा और झारखंड में होने वाले विधानसभा चुनावों में यह बड़ा मुद्दा बन सकता है। हालांकि सरकार इस फैसले पर कैसे अमल करती है, करना चाहती भी है या नहीं, यह भी जल्द स्पष्टस होगा। बहरहाल देश सामाजिक न्याय और समानता की लड़ाई के एक नए दौर में प्रवेश करने वाला है, यह निर्विवाद है।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह से राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने की सौंजन्य भेंट

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह से, संसद भवन नई दिल्ली में पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण, विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने गुरूवार को सौंजन्य भेंट की। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंखक कल्याण विभाग में संचालित कार्यक्रमों और योजनाओं की जानकारी गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री शाह को दी। उन्होंने प्रदेश में विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु कल्याण के लिये किये जा रहे कार्यों से भी केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री शाह को अवगत कराया।

ट्राला-कार की टक्कर से 3 वाहनों में आग लगी

3 शहरों की दमकलों ने 6 घंटे में बुझाई; धार में फोरलेन पर रोकना पड़ा ट्रैफिक

धामनोद (नप्र)। धार के धामनोद में ट्राले की टक्कर के बाद 3 वाहनों में आग लग गई। फायर ब्रिगेड की टीम ने 3 घंटे की मशक्कत के बाद आग को नियंत्रित कर लिया। फिर एक बार फिर आग भड़क गई। जिसे काबू करने के लिए टीम को भारी मशक्कत करनी पड़ी। हादसे में घायल 3 घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

काकड़दा चौकी प्रभारी सब इंस्पेक्टर मिथुन चौहान ने बताया कि हादसा राऊ-खलघाट फोरलेन के गणपति घाट पर गुरुवार देर रात 1 बजे हुआ। एक ब्रेक फेल होने से एक ट्राले ने अनियंत्रित होकर आगे चल रही कार को टक्कर मार दी। फिर ट्राला और कार यहां पहले से दुर्घटनाग्रस्त खड़े वाहन से टकरा गए। हादसे के बाद 2 वाहनों में आग लगा गई। 2 कार सवार और ट्राले का ड्राइवर घायल हैं।

तीन शहर की फायर ब्रिगेड बुलानी पड़ी

धामनोद, महेश्वर और मानपुर से फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंची। टीम ने करीब 3 घंटे की मशक्कत के बाद आग बुझाई, लेकिन सुबह 6 बजे वाहनों में फिर आग भभकना शुरू हो गई। एक वाहन में प्लास्टिक के दाने भरे थे। संभवतः आग इसी से भड़की। लपटों ने तीनों वाहनों को अपनी चपेट में ले लिया। कुछ ही देर में आग ने इतना विकराल रूप ले लिया कि फोरलेन पर आवागमन बंद करना पड़ा। दोनों ओर वाहनों की कतार लग गई। फायर ब्रिगेड की टीम ने सुबह 9 बजे आग पर काबू पा लिया।

पुलिस का दावा-मध्य प्रदेश का पहला मामला

विदेशी कंपनियों में जमा धोखाधड़ी का 43.77 लाख रुपया वापस भारत लाया गया

- मामला एमटीएफई कंपनी द्वारा लालच देकर करोड़ों रु. की धोखाधड़ी का
- रतलाम पुलिस कंपनी के फर्जीवाड़े की परतें खोल कर रुपया वापस लाई

रतलाम (नप्र)। एमटीएफई कंपनी द्वारा निवेश कर कम समय में अधिक लाभ कमाने का लालच देकर लोगों के साथ करोड़ों रुपयों की धोखाधड़ी करने के बहुचर्चित मामले में रतलाम पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने करीब एक वर्ष की मेहनत के बाद विभिन्न विदेशी कंपनियों में जमा धोखाधड़ी का 43.77 लाख 503 रुपये (भारतीय मुद्रा) वापस भारत लाया गया है। उक्त रुपया सरकारी खाता खोलकर उसमें जमा कराया गया। जापान व सिंगापुर बेस्ड कंपनियों से 108 करेंसी में उक्त रुपया देश में वापस लाने का मध्यप्रदेश में यह पहला मामला है।

एसपी राहुल कुमार लोढा ने शुक्रवार को पत्रकारवार्ता में बताया कि एक वर्ष पहले एमटीएफई क्रिप्टो करेंसी फ्राड के जिले में दो मामले दर्ज किए गए थे। एएसपी राकेश खाखा, सीएसपी अभिनव कुमार बारंगे, जावरा सीएसपी दुर्गेश आर्मो के मार्गदर्शन में जावरा औद्योगिक क्षेत्र, स्टेशन रोड थाना व सायबर सेल की संयुक्त टीम गठित कर कार्रवाई के निर्देश दिए थे।

टीम ने कार्रवाई करते हुए अगस्त 2023 में आरोपित हुजैफा जमाली बोहरा निवासी नीमच, वाजिद व वसीम दोनों निवासी जावरा, गोविंदसिंह चंद्रावत निवासी ग्राम तुमरी (मंदसौर) व संदीप टांक निवासी प्रतापगढ़ (राजस्थान) सहित सात आरोपितों को गिरफ्तार किया था।

इसके बाद सितंबर 2023 में एमटीएफई से जुड़ी कंपनी कलिन स्केम प्रायवेट लि. के मालिक आरोपित योगानंदा बांबोरे निवासी बैंगलुरू (कर्नाटक) को भी गिरफ्तार किया गया था। जांच के दौरान निवेशकों को दिए गए एमटीएफई के क्यूआर कोड/टीआरसी -20 के एड्रेस एकत्र किए गए। मंदसौर, रतलाम, धार, नीमच, रतलाम, उज्जैन व राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के 373 पीड़ितों ने क्यूआर कोड़ जमा कराए थे। इनमें रतलाम जिले के 266 पीड़ित शामिल थे, जिनसे 1.43 करोड़ रुपये की ठगी की गई थी। एमटीएफई फ्राड में संलिप्त कलिन कंपनी के डायरेक्टर योगानंदा बमोरे से पूछताछ कर बाइनेंस हुओबी टीआरसी 20 आदि क्रिप्टो करेंसी एक्सचेंज प्लेटफार्म की जानकारी ली गई।

अनेक देशों में पाया गया फ्रॉड- विभिन्न माध्यमों से जानकारी प्राप्त कर पुलिस ने करीब 10.48 लाख टीआरसी 20 के एड्रेस प्राप्त किए, जिनमें एमटीएफई क्यूआर कोड द्वारा बड़ी मात्रा में रुपयों का लेनदेन अलग-अलग देशों से करना पाया गया। इनका एनालिसिस करने पर एमटीएफई द्वारा भारत के अलावा श्रीलंका, बांग्लादेश, पाकिस्तान व नाइजीरिया में भी इस तरह का फ्राड करने पाया गया।

टीआरसी20 से करेंसी कनवर्ट करने के लिए 56 काउंटरपार्टी एक्सचेंज का उपयोग किया गया, जिनमें मुख्य रूप से बाइनेंस, कूकाइन, ओक्स, हुओबी, बायबीट, यूएसडीटी-टोकन, एमइएक्स, सनक्रप्टो आदि एक्सचेंज शामिल है।

दलबदलू विधायकों की निधि पर रोक लगाने स्पीकर को लेटर

कांग्रेस की मांग- बीजेपी जॉइन करने की तारीख से जारी ना की जाए विधायक निधि

भोपाल (नप्र)। एमपी में दलबदल की सियासत लगातार चल रही है। कांग्रेस ने बीना विधायक निर्मला सप्रे और विजयपुर विधायक रामनिवास रावत की विधायक निधि पर दलबदल करने की तारीख से ही रोक लगाने की मांग की है। एमपी कांग्रेस की ओर से विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर को पत्र भेजा गया है। सागर और श्योपुर जिलों के कलेक्टर्स को भी पत्र की कॉपी भेजी गई है। एमपी कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता भूपेन्द्र गुप्ता ने विधानसभा अध्यक्ष

नरेन्द्र सिंह तोमर को पत्र लिखा है। जिसमें उन्होंने स्पीकर से मांग करते हुए लिखा है- कांग्रेस के चुनाव चिन्ह पर चुनाव जीतकर बीना और विजयपुर क्षेत्र के विधायकों ने सार्वजनिक रूप से भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर ली है। जो कि दल बदल कानून की वैधानिक परिधि में आती है। और विधायक पद के लिए अयोग्यता की परिधि में भी आता है। आप विधि के प्रदेश में सबसे बड़े रक्षक और विधायिका के पालक हैं। जनप्रतिनिधित्व के क्षेत्र में शुचिता और नैतिकता को संरक्षण देने की आपसे अपेक्षा स्वाभाविक है।

एक चैतन्य नागरिक के रुप में आपसे विनम्र आग्रह है। कि ऐसे विधायक जब तक पुनः चुनकर विधायक नहीं बन जाते तब तक भाजपा में प्रवेश की तिथि से उनके विधायक निधि के उपयोग को पूर्ण रोक लगाकर नैतिक मूल्यों को संरक्षण दें।

हथौड़ा निकालने कुएं में उतरे 4 लोगों की मौत

छतरपुर में जहरीली गैस से गई जान; मृतकों में 3 एक ही परिवार के

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर में कुएं में जहरीली गैस से दम घुटने से 4 लोगों की मौत हो गई। गड़ी मलहरा के कुर्राहा गांव में एक घर के पीछे कुएं को ढंकने का काम चल रहा था। इसी दौरान हथौड़ा कुएं में गिर गया। एक के बाद एक ग्रामीण कुएं में उतरे और उनकी जान चली गई। परिजनों का कहना है कि रेस्क्यू समय पर शुरू हो जाता और एम्बुलेंस आ जाती तो जान बच सकती थी।

ग्रामीणों ने बताया, शेख वसीर (60) अपने घर में निर्माण कार्य करा रहे थे। सुबह करीब 9 बजे मिस्त्री मुन्ना कुशवाहा (45) कुएं को कांक्रीट से ढंक रहा था, इसी दौरान उसके हाथ से हथौड़ा कुएं में गिर गया। वह हथौड़ा निकालने के लिए नीचे उतरा था। फिर शेख वसीर कुएं में गए। वे भी बाहर नहीं आए तो एक-एक कर उनके दोनों बेटे शेख असलम (37) और भतीजा अलताब (21) भी कुएं में गए। जब चारों बाहर नहीं आए, तो अनहोनी की आशंका पर मौके पर भीड़ लग गई।

समय पर न पुलिस आई, न एम्बुलेंस- मृतकों के परिजनों का कहना है कि डायल 100 और एम्बुलेंस को सूचना दी गई, लेकिन काफी देर दोनों ही मौके पर नहीं पहुंची। इसके बाद कुछ लोग पुलिस थाने गए। इस दौरान ग्रामीणों ने रेस्क्यू शुरू कर दिया। दो शवों को निकालने के दौरान थाने गए लोग डायल 100 में बैठकर लौटे। जब चारों शव निकाल लिए गए, तब जाकर एम्बुलेंस पहुंची। एम्बुलेंस में ऑक्सीजन की व्यवस्था नहीं थी।

पीड़ितों से मिले अधिकारी- अपर कलेक्टर मिलन्द नागदेव, एडिशनल एसपी विक्रम सिंह, सिविल सर्जन जीएल अहिरवार दोपहर 1.40 बजे मृतकों के परिजनों से मिलने पीएम हाउस पहुंचे। अपर कलेक्टर ने बताया, जो भी शासन की ओर से मदद दी जा सकेगी वह दी जाएगी। वहीं, एएसपी विक्रम सिंह ने कहा कि पुलिस के मौके पर नहीं पहुंचने वाली बात गलत है। गांव दूरी पर है। इसलिए थोड़ा समय लगा होगा।

दृष्टिबाधित बच्चों से किया वादा टीआई ने निभाया, उनके साथ जन्मदिन मनाया

गायन कला की भी बखूबी प्रस्तुति दी, जिसे खूब सराहा गया

इंदौर। जन्मदिन मनाना बेहद व्यक्तिगत मामला होता है। इसे कौन, कब, कहां और कैसे मनाए ये उसकी अपनी मर्जी होती है। लेकिन, कुछ लोग अपने जन्मदिन को कुछ ख़ास बनाना चाहते हैं। ऐसा ही एक जन्मदिन पिछले दिनों एक दृष्टिबाधित स्कूल में संयोगितागंज के थाना प्रभारी ने मनाया। दरअसल, उन्होंने इन बच्चों से वादा किया था कि वे अपना जन्मदिन उनके स्कूल में आकर मनाएंगे, वही उन्होंने किया भी।

कुछ दिन पहले संयोगितागंज थाने के टीआई को आरक्षक आर काली के जरिए सूचना मिली थी कि दो दृष्टिबाधित बच्चे जिनकी उम्र करीब 7-8 वर्ष है नवलखा क्षेत्र में देखे गए। टीआई ने तुरंत नवलखा बीट आरक्षक जयराज को सूचना की तस्दीक करने भेजा। इसके बाद दोनों बच्चों को खोजकर थाने लेकर आया गया। थाना प्रभारी ने अपनी टीम के माध्यम से पता किया, तो जानकारी मिली कि दृष्टिबाधित बच्चों की हेलन केलर शिक्षा अकादमी से दो बच्चे बगैर किसी को कुछ बताए निकल गए हैं।

वार्डन पाटिल को स्टॉफ के साथ थाने बुलाकर संयोगितागंज टीआई ने दोनों बच्चों को सकुशल उनके सुपुर्द किया। इस दौरान टीआई सतीश पटेल ने बच्चों से बहुत सी बातें की। उनकी मनः स्थिति को समझने का प्रयास किया। टीआई ने बच्चों के अकेलेपन को महसूस कर उन बच्चों से वादा किया कि वे अपना आने वाला जन्मदिन, बच्चों के साथ उनके स्कूल में आकर मनाएंगे। 27 जुलाई को अपने जन्मदिन के अवसर पर टीआई अपने स्टाफ के साथ बच्चों के स्कूल पहुंचे और वादे के अनुसार बच्चों के साथ धूमधाम से अपना जन्मदिन मनाया।

बच्चों को मिठाई और फल वितरित किए गए। बच्चों ने अपनी गायन कला की भी बखूबी प्रस्तुति दी, जिसे खूब सराहा गया। थाना प्रभारी सतीश पटेल ने बताया कि बच्चों के साथ जन्मदिन मनाने से उनका जन्मदिन सार्थक हुआ। यह उनके लिए जीवन के बहुत भावुक और कभी न भूलने वाले पल रहे।